



नववर्ष का उपहार सरकारी नौकरी लगातार

JSSC द्वारा आयोजित
CGL परीक्षा में
चयनित 1,910 अभ्यर्थियों
का

नियुक्ति पत्र वितरण समारोह

मुख्य अतिथि

श्री हेमन्त सोरेन

माननीय मुख्यमंत्री, झारखण्ड

सम्मानित अतिथि

श्री राधा कृष्ण किशोर

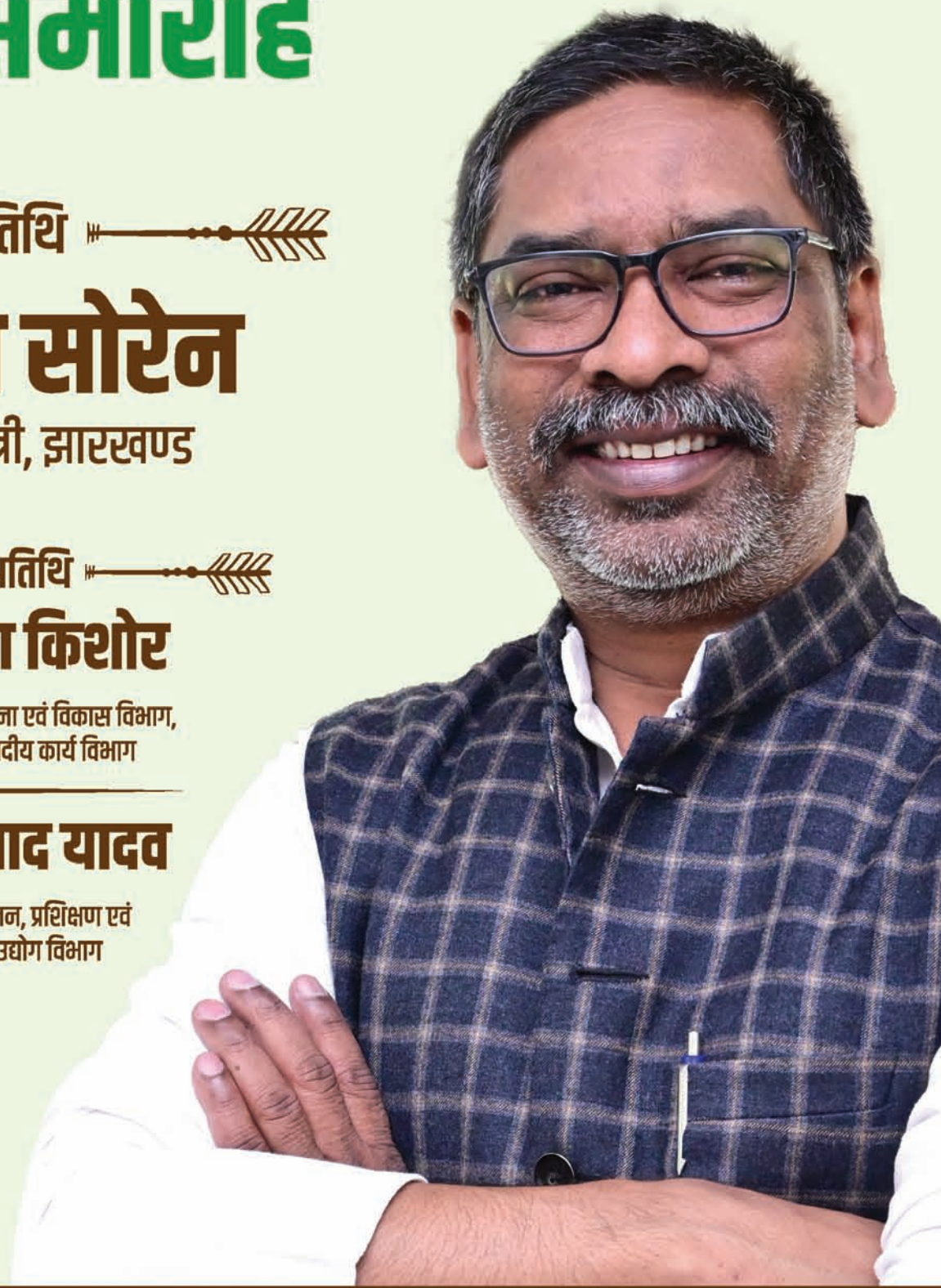
माननीय मंत्री, वित्त विभाग, योजना एवं विकास विभाग,
वाणिज्य कर विभाग एवं संसदीय कार्य विभाग

श्री संजय प्रसाद यादव

माननीय मंत्री, श्रम, नियोजन, प्रशिक्षण एवं
कौशल विकास विभाग, उद्योग विभाग

30 दिसंबर, 2025 | अपराह्न 01:30 बजे से
मोरहाबादी मैदान, रांची

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, झारखण्ड सरकार





Avneet Kaur Serves Sexy Winter...

SHARE	
सेंसेक्स	: 84,695.54
निफ्टी	: 25,942.10
SARAFSA	
सोना	: 13,095
चांदी	: 281.00

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

BRIEF NEWS

'कौडिन्व' पहली यात्रा पर ओमान के लिए रवाना

NEW DELHI : सोमवार को भारत की प्राचीन जहाज निर्माण और समुद्री परंपराओं को पुनः साकार करते हुए भारतीय नौसेना का प्राचीन पाल विधि से निर्मित पोत 'कौडिन्व' अपनी पहली समुद्री यात्रा पर गुजरात के पोरबंदर से रवाना हुआ। यह पोत ओमान के मस्कट तक की यात्रा करते हुए प्रतीकालक रूप से उन ऐतिहासिक समुद्री मार्गों का पुनर्मूल्यांकन करेगा, जिन्होंने सहस्राब्दियों से भारत को व्यापक हिंद महासागर से जोड़ा है। इसे प्राचीन भारतीय पोतों के चित्रण से प्रेरणा लेते हुए पूरी तरह से पारंपरिक सिलाई-तख्ता तकनीक का उपयोग करके निर्मित किया गया है। आईएनएसवी कौडिन्व इतिहास, शिल्प कौशल और आधुनिक नौसैनिक विशेषज्ञता का एक दुर्लभ संगम है। समकालीन पोतों के विपरीत इसके लकड़ी के पल्लों को नारियल के रेशे की रस्सी से सिला गया है और प्राकृतिक राल से सील किया गया है। यह भारत के टोटो और हिंद महासागर में प्राचीन समय में प्रचलित पोत निर्माण की परंपरा को दर्शाता है।

दिल्ली में छाई धुंध की मोटी परत, एक्वआई 362

NEW DELHI : सोमवार सुबह से ही दिल्ली-एनसीआर में कोहरा और धुंध की मोटी परत छाई रही। दिल्ली में आज दोपहर 12 बजे औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्वआई) 362 दर्ज किया गया, जो बेहद खराब श्रेणी में आता है। एक्वआई वेबसाइट के अनुसार दिल्ली में दोपहर 12 बजे एक्वआई 362 दर्ज किया गया। ग्रेटर नोएडा का 344, गाजियाबाद का 382, नोएडा का एक्वआई 414, फरीदाबाद का 388 और गुरुग्राम का 327 दर्ज किया गया, जो बेहद खराब श्रेणी में हैं। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के मुताबिक अलीपुर का 380, आनंद विहार का एक्वआई 453, चांदनी चौक 416, बुराड़ी क्रॉसिंग 392, सिरि फोर्ट 418, आईआईओ का 397, गुा जीपीसीसी का 386, पूषा आईएमडी का 377 और वजीरपुर का एक्वआई 444 दर्ज किया गया। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने बताया कि राजधानी-एनसीआर का आज अधिकतम तापमान 21-23 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 7-9 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने के आसार हैं।

टाटानगर-एर्नाकुलम ट्रेन में लगी आग, एक की मौत

VISAKHAPATNAM : विशाखापट्टनम से करीब 66 किमी दूर येलमचिली में टाटानगर-एर्नाकुलम एक्सप्रेस ट्रेन के दो डिब्बों में आग लगने से एक व्यक्ति की मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि रविवार रात 12:45 बजे ट्रेन में आग लगने की खबर मिली। उस वक्त ट्रेन आंध्र प्रदेश के अनाकापल्ली में येलमचिली रेलवे स्टेशन पर पहुंच गई थी। जब ट्रेन में आग लगी, तो दोनों कोच में से एक में 82 और दूसरे में 76 यात्री थे। पुलिस को भी। कोच से एक शव मिला। मरने वाले की पहचान 70 साल के चंद्रशेखर सुंदरम के रूप में हुई है।

22वें संथाली भाषा दिवस और ओलचिकी लिपि के शताब्दी उत्सव समारोह में शामिल हुईं द्रौपदी मुर्मू अपनी भाषा में संविधान जानना जरूरी : राष्ट्रपति

PHOTON NEWS JSR :

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा है कि संथाली भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है। इसलिए देश के नियम-कानूनों की जानकारी अपनी भाषा में लोगों तक पहुंचनी चाहिए। कानूनी प्रावधानों की अज्ञानता के कारण कई निर्दोष लोग जेल की सलाखों के पीछे पहुंच जाते हैं। राष्ट्रपति ने भारतीय संविधान के संथाली अनुवाद का निष्कर्ष करते हुए बताया कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जन्म शताब्दी के अवसर पर इसी साल 26 दिसंबर को ओलचिकी लिपि में संविधान का प्रकाशन किया गया। उन्होंने इसे संथाली समाज को मजबूत बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू सोमवार को जमशेदपुर के करनडीह स्थित जाहेरथान परिसर में 22वें संथाली भाषा दिवस और ओलचिकी लिपि के शताब्दी उत्सव वर्ष समारोह को संबोधित कर रही थीं। कार्यक्रम स्थल आने से पहले उन्होंने जाहेरथान में पूजा-अर्चना की। इस दौरान झारखंड के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन उनके साथ मौजूद रहे। इस कार्यक्रम की खास

कानूनी जानकारी के अभाव में निर्दोष लोगों को जाना पड़ता है जेल, आठवीं अनुसूची में शामिल है संथाली भाषा में संविधान जानना जरूरी : राष्ट्रपति

भारत ही नहीं, विश्व के कई हिस्सों में है संथाल समुदाय

26 दिसंबर को ओलचिकी लिपि में संविधान का किया गया प्रकाशन, यह समाज को मजबूत बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम

साहित्यकारों की पेशा की, कहा-आदिवासी स्वामिमान एवं अस्तित्व की रक्षा में उनका योगदान अतुलनीय

मातृभाषा में सभी आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराना आवश्यक

बात यह रही कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन दोनों ने समारोह को संथाली भाषा में संबोधित



मुर्मू ने एनआईटी जमशेदपुर के दीक्षांत में छात्रों को बताया नेशन बिल्डर

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) जमशेदपुर का 15वां दीक्षांत समारोह संस्थान परिसर में पहली बार किसी राष्ट्रपति की उपस्थिति में संपन्न हुआ। दीक्षांत समारोह की मुख्य अतिथि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू रही, जिन्होंने मेधावी छात्रों को डिग्री व पदक प्रदान किए और अपने प्रेरणादायी

प्रोटोकॉल तोड़कर सड़क पर उतरीं मुर्मू आम लोगों से मिल किया अभिवादन

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सोमवार को जमशेदपुर और एनआईटी आदित्यपुर के दौरे के दौरान अपनी सादगी और जनसंपर्क से एक बार फिर सबको प्रभावित किया। उनके काफिले के गुजरते समय आकाशवाणी चौक के पास कुछ स्थानीय आदिवासी निवासी पानी की समस्या को लेकर सड़क किनारे इकट्ठा होकर इंतजार कर रहे थे। राष्ट्रपति ने अचानक अपना प्रोटोकॉल दरकिनार करते हुए गाड़ी रुकवाई और खुद बाहर निकलकर उनसे मिलने पहुंच गईं। हाथ हिलाकर लोगों का अभिवादन किया और बातचीत की। इसके बाद वे गाड़ी में सवार होकर आगे बढ़ गईं।

राष्ट्रपति मुर्मू के प्रयासों से आदिवासी समाज का बड़ा मान-सम्मान : हेमंत

करनडीह स्थित दिशोम जाहेरथान में सोमवार को आयोजित 22वें संथाली भाषा दिवस 'परसी महा' तथा ओलचिकी लिपि के शताब्दी वर्ष समारोह को विशिष्ट अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार जनजातीय भाषाओं और संस्कृति को पहचान व सम्मान दिलाने के लिए पूरी तरह समर्पित है। आदिवासी समाज के साथ मिलकर इस दिशा में लगातार काम हो रहा है। आज का यह आयोजन इसलिए भी खास है क्योंकि यहां संथाली भाषा-साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले साहित्यकारों और बुद्धिजीवियों को सम्मानित किया जा रहा है, जो गर्व की बात है। मुख्यमंत्री ने जोर देकर कहा कि झारखंड में ओलचिकी लिपि के माध्यम से संथाली भाषा की पढ़ाई को सुनिश्चित करने के लिए सरकार पूरी तरह वचनबद्ध है। जनजातीय भाषाओं के संरक्षण, सुरक्षा और समृद्धि के लिए ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। आज संथाली जैसी भाषाओं के जरिए



आदिवासी समाज की आवाज दूर-दूर तक गूंज रही है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि आदिवासी समाज के सशक्तीकरण में राष्ट्रपति का योगदान बेहद महत्वपूर्ण है। राष्ट्रपति भवन में आयोजित कई कार्यक्रमों में आदिवासी संस्कृति, परंपरा और पहचान को प्रमुखता दी जाती है।

नए साल की सौगात : सीजीएल परीक्षा में हुआ है चयन आज 1910 अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र देंगे हेमंत सोरेन

PHOTON NEWS RANCHI :

झारखंड के युवाओं को मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन नए साल की सौगात देनेवाले हैं। मंगलवार को 1.30 बजे से ऐतिहासिक मोरहाबादी मैदान में सीजीएल परीक्षा में सफल रहे अभ्यर्थियों को मुख्यमंत्री नियुक्ति पत्र वितरित करेंगे। झारखंड कर्मचारी चयन आयोग के द्वारा काफ़ी जटिलजटिल के बाद सीजीएल परीक्षा में चयनित

सहायक प्रशाखा पदाधिकारी के 847, प्रखंड कल्याण पदाधिकारी के 191, प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी के 239, श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी के 170, अंचल निरीक्षक सह कानूनगो के 178, कनीय सचिवालय सहायक के 288 और प्लानिंग असिस्टेंट के चार पदों पर चयनित अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र सौंपा जाएगा। जाहिर तौर पर इन पदों पर नियुक्तियां होने से सरकारी विभागों में खाली पड़े पदों को भरने की दिशा में सरकारी के बड़ी कामयाबी हासिल होगी।

शीतलहर के असर ने बढ़ाई परेशानी, अस्पतालों में मरीजों की तादाद में इजाफा कम होने का नाम नहीं ले रहा सर्दी का सितम

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड के कई जिले शीतलहर की चपेट में हैं। न्यूनतम तापमान में गिरावट के कारण लोगों की परेशानी बढ़ गई है। अस्पतालों में टंट से प्रभावित और वायरल फीवर के मरीजों की तादाद में इजाफा हो रहा है। सर्दी का सितम कम होने का नाम नहीं ले रहा है। रांची मौसम केंद्र ने सात जिलों में शीतलहर को लेकर चेतावनी जारी की है। इनमें रांची, गुमला, लोहरदगा, लातेहार, खूंटी, बोकारो और रामगढ़ जिला शामिल हैं। कई जगहों पर अधिकतम और न्यूनतम तापमान सामान्य से 3 से 5 डिग्री तक कम रिकॉर्ड हुआ है। अगले दो दिनों में न्यूनतम तापमान में दो से तीन डिग्री सेल्सियस वृद्धि होने की संभावना है। मंगलवार को को पलामू, गढ़वा, चतरा और लातेहार में घना कोहरा छाए रहने की संभावना है।

सात जिलों के लिए मौसम विभाग की ओर से जारी किया गया अलर्ट

लोहरदगा के अलावा तीन जिलों में 7 डिग्री सेल्सियस से कम रहा मिनिमम टेम्परेचर



चार उड़ानें कैसिल

सोमवार को रांची के बिरसा मुंडा एयरपोर्ट से ऑपरेशनल कारणों से चार उड़ानें कैसिल कर दी गईं। अचानक पलाइड रह होने के कारण यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ा। रर उड़ानों में कोलकाता, दिल्ली और पटना रूट की डींगो पलाइड शामिल है। एयरपोर्ट प्रशासन ने यात्रियों से अपील की है कि वे यात्रा पर निकलने से पहले अपनी फ्लाइट की स्थिति जरूर जांच लें।

3.1 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया लोहरदगा का न्यूनतम तापमान

सोमवार को लोहरदगा में सबसे कम तापमान रिकॉर्ड हुआ है। यहां न्यूनतम तापमान 3.1 डिग्री पहुंच गया है। रांची में पारा 7.2 डिग्री रिकॉर्ड हुआ। गुमला में पारा 4.9 डिग्री दर्ज हुई है। इसके अलावा खूंटी में 5.0 डिग्री, डाल्टनगंज में 6.8 डिग्री, सिमडेगा में 7.3 डिग्री, चाईबासा में 8.4 डिग्री, पश्चिमी सिंहभूम में 8.8 डिग्री, हजारीबाग में 8.9 डिग्री, सरायकेला में 9.1 डिग्री, कोडरमा में 9.2 डिग्री, बोकारो में 9.5 डिग्री और लातेहार में 9.5 डिग्री तापमान है।

भविष्य का विकास इलेक्ट्रॉनिक्स और हरित ऊर्जा क्षेत्र से जुड़ेंगे नए आयाम

देश में अब रेयर अर्थ मेटल के घरेलू निर्माण की राह होगी आसान

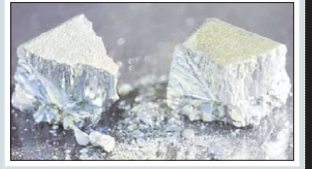
PHOTON NEWS @ RESEARCH DESK :

हाई टेक्नोलॉजी के दौर में सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में विकास के लिए इलेक्ट्रॉनिक टेक्नोलॉजी की जरूरत है। भविष्य देशों में टेक्नोलॉजी के विकास की रफ्तार स्वाभाविक रूप से विकासशील देशों की ओर झुक रही है। इसके लिए विकासशील देशों को कई अर्थों में दूसरे पर निर्भर रहना पड़ता है। टेक्नोलॉजी की दुनिया में हो रहे विकास के बीच आत्मनिर्भरता की दृष्टि से हाल ही में केंद्र सरकार ने अत्यंत महत्वपूर्ण कदम उठाया है। रेयर अर्थ मेटल यानी दुर्लभ पृथ्वी धातु के घरेलू निर्माण को बढ़ावा देने के लिए 7280 हजार करोड़ रुपये की योजना को स्वीकृत किया गया है। अनुमान लगाया जाता है कि इस योजना का प्रभाव नए साल में दिखने लगेगा। इसका सीधा मकसद चीन पर निर्भरता कम करना और इलेक्ट्रिक वाहन, रक्षा, इलेक्ट्रॉनिक्स और हरित ऊर्जा जैसे क्षेत्रों के लिए जरूरी आपूर्ति को सुरक्षित करना है। इन क्षेत्रों में ऐसे तत्वों का व्यापक पैमाने पर इस्तेमाल होता है। टेक्नोलॉजी और रसायन वैज्ञानिकों के अनुसार, रेयर अर्थ मेटल्स 17 बाह्यिक तत्वों का एक समूह है, जिन्हें दुर्लभ मुद्रा धातुएं भी कहते हैं। ये प्राकृतिक रूप से धरती की ऊपरी परत में कम सांद्रता में पाए जाते हैं।

हाल ही में केंद्र सरकार ने 7280 करोड़ रुपये की योजना को दी है मंजूरी प्राकृतिक रूप से धरती की ऊपरी परत में कम सांद्रता में पाए जाते हैं ये तत्व

चीन पर निर्भरता कम करने के लिए उठाया गया कदम, नए साल में दिखने लगेगा असर

इलेक्ट्रिक वाहनों व रक्षा क्षेत्र के उपकरणों में भी व्यापक पैमाने पर होता है इस्तेमाल



इस प्रकार के तत्वों को निकालने और शुद्ध करने की प्रक्रिया होती है अत्यंत जटिल

वर्तमान बिजनेस ट्रेड को देखते हुए वर्ल्ड मार्केट में लगातार बढ़ रही डिमांड

नई स्कीम से आयात की घटेगी रफ्तार

लेकिन, इनके अतिरिक्त चुंबकीय और विद्युत गुणों के कारण स्मार्टफोन, इलेक्ट्रिक वाहन, कंप्यूटर और रक्षा उपकरण जैसे आधुनिक तकनीकों में इनका बड़े पैमाने पर इस्तेमाल होता है। इन तत्वों को निकालना और शुद्ध करना मुश्किल, जटिल तथा महंगा होता है, इसलिए इन्हें दुर्लभ कहा जाता है। भारी उद्योग मंत्रालय और अर्थ से दी गई जानकारी के मुताबिक, सरकार की यह

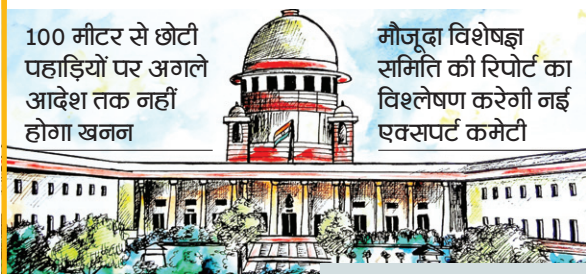
योजना 'सिस्टर्ड रेयर अर्थ परमानेंट मैनेट' के निर्माण से जुड़ी है। ये चुंबक नियुक्तिमिम-आयर्न-बोरॉन से बनते हैं और दुनिया के सबसे शक्तिशाली स्थायी चुंबकों में गिने जाते हैं। अभी भारत को ऐसे चुंबक पूरी तरह आयात करने पड़ते हैं, जबकि इनकी मांग तेजी से बढ़ रही है। नई योजना से घरेलू क्षमता खड़ी करने पर जोर दिया गया है। इन चुंबकों के बिना आधुनिक

तकनीक की कल्पना अधुरी है। खासकर इलेक्ट्रिक वाहनों और नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में इनकी जरूरत लगातार बढ़ रही है, जिससे आपूर्ति सुरक्षा देश के लिए अहम बन गई है। वर्तमान बिजनेस ट्रेड को देखते हुए वर्ल्ड मार्केट में इन तत्वों की डिमांड बढ़ रही है। योजना के तहत देश में सालाना 6000 मीट्रिक टन चुंबक निर्माण क्षमता विकसित की जाएगी।

भीड़ ने कार के पिछले दरवाजे के लॉक को कर दिया क्षतिग्रस्त बंगाल में चुनाव आयोग के विशेष पर्यवेक्षक को महिलाओं ने बनाया निशाना

KOLKATA : सोमवार को पश्चिम बंगाल में दक्षिण 24 परगना जिले के मगराहाट इलाके चुनाव आयोग द्वारा नियुक्त विशेष पर्यवेक्षक सी. मुरगन को तीखे विरोध का सामना करना पड़ा। मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के विरोध में बड़ी संख्या में महिलाओं ने नारेबाजी करते हुए उनके वाहन पर हमला किया और कार के पिछले दरवाजे का लॉक क्षतिग्रस्त कर दिया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, प्रदर्शनकारी महिलाएं एसआईआर के खिलाफ नारे लगा रही थीं और साथ ही केंद्र सरकार पर 100 दिन के काम की योजना का फंड रोकने का आरोप भी लगा रही थीं। गो बैक के नारे लगाते हुए भीड़ ने पर्यवेक्षक की कार को घेर लिया, जिससे स्थिति कुछ समय के लिए तनावपूर्ण हो गई। यह घटना मगराहाट-2 क्षेत्र में उस समय हुई, जब सी. मुरगन डायमंड हार्बर लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत एक स्कूल में वतन रही सुनवाई में शामिल होने पहुंचे थे। प्रदर्शनकारियों की मांग थी कि सुनवाई केंद्र पर बूथ लेवल एजेंट-2 की मौजूदगी सुनिश्चित की जाए। हालात ऐसे हो गए कि मौके पर मौजूद पुलिस भी स्थिति को तुरंत नियंत्रित नहीं कर सकी। भारी विरोध के कारण विशेष पर्यवेक्षक को सुनवाई कक्ष में प्रवेश करने के लिए काफी देर तक इंतजार करना पड़ा। सुनवाई समाप्त होने के बाद बाहर निकलते समय भी उन्हें इसी तरह के विरोध का सामना करना पड़ा।

अरावली मामले में अपने ही ऑर्डर पर 'सुप्रीम' स्टे



NEW DELHI @ PTI :

सोमवार को सुप्रीम कोर्ट ने अरावली पर्वतमाला को लेकर उठे विवाद के बीच अपने ही ऑर्डर पर रोक लगा दी है। उल्लेखनीय है कि 20 नवंबर को शीफ़ अदालत ने 100 मीटर से छोटी पहाड़ियों पर खनन का आदेश दिया था। अब 21 जनवरी 2026 तक खनन पर रोक लगा दी गई है। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जेके माहेश्वरी और एजी मसीह की वैंकेशन बेंच ने सुनवाई के बाद यह आदेश जारी किया। कोर्ट ने कहा है कि इस मामले की जांच के लिए एक्सपर्ट कमेटी गठित की जाए। यह कमेटी मौजूदा विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट का विश्लेषण करेगी। इसके बाद संबंधित मुद्दों पर कोर्ट को सुझाव देगी। कोर्ट ने केंद्र और अरावली के चार राज्यों-

कोर्ट ने नोटिस जारी कर केंद्र, राजस्थान, गुजरात, दिल्ली और हरियाणा सरकार से मांगा जवाब

राजस्थान, गुजरात, दिल्ली और हरियाणा) को भी नोटिस जारी कर इस मुद्दे पर जवाब मांगा है। (सोमवार) सीजेआई सूर्यकांत ने निर्देश दिया है कि विशेषज्ञ समिति की सिफारिशें और उन पर सुप्रीम कोर्ट की ओर से की गई आगे की टिप्पणियां फिलहाल स्थगित रहेंगी। अदालत ने साफ किया कि अगली सुनवाई तक इन सिफारिशों को लागू नहीं किया जाएगा। इन सिफारिशों में से एक में कहा गया है कि 100 मीटर से ऊंची पहाड़ियों को ही अरावली पर्वतमाला माना जाए।

कुलदीप सेंगर को झटका, हिरासत में से नहीं किया जाएगा रिहा, सजा निलंबित करने के फैसले पर रोक

सोमवार को सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली हाईकोर्ट के उस आदेश पर रोक लगा दी, जिसमें 2017 के उन्नाव बलात्कार मामले में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) से निकसित नेता कुलदीप सिंह सेंगर की उम्रकैद की सजा को निलंबित कर दिया गया था। प्रधान

न्यायाधीश सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जेके माहेश्वरी तथा न्यायमूर्ति अंगद्वीरजी जॉर्ज मसीह की अवकाशवालीन पीठ ने सेंगर को नोटिस जारी कर सीबीआई की उस याचिका पर जवाब मांगा, जिसमें उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती दी गई है।

शिव सेवा के नए संकल्प लेने का। छात्रों को 'नेशन विल्डर्स' बतवाते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि शिक्षण संस्थान सचिव डिग्री देने की फैसला नहीं, बल्कि धर्मियता की सोच को अकार देने वाली बौद्धिक प्रयोगशालाएँ हैं। संबोधन के दौरान एक मजेदार पल तब आया जब राष्ट्रपति ने कहा तालियाँ सुनकर हलके-फुल्के अंदाज में कहा 'लगता है बच्चे भूख हैं, इसलिए जोश कम है। तालियाँ बजाकर अपना उन्हासा दिखाओ।' उन्होंने छात्रों को माता-पिता और गुरुओं के प्रति सर्वदै आभारी रहने की नसीहत भी दी। राष्ट्रपति ने एनआईटी के इनस्क्रिप्शन सेन और स्टार्टअप इकोसिस्टम की विशेष प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि सस्टेनेबल एनर्जी, अपशिष्ट प्रबंधन और उद्यमिता जैसे क्षेत्रों में बहु-पक्षीय सहयोग की जरूरत है।

स्वामी गोविंद देव और आरके बेहरा को मानद उपाधि : दीक्षांत समारोह में स्वामी गोविंद देव गिरि महराज को डॉक्टर ऑफ लिटरेचर और उद्योगपति रबींद्र कुमार बेहरा को डॉक्टर ऑफ फिलांसाफी की मानद उपाधि प्रदान की गई।

कृष्णाशीश और प्रियांशु को गोल्ड मेडल, 1114 को उपाधि : एनआईटी के 15वें दीक्षांत समारोह में कुल 1,114 छात्रों को उपाधियाँ दी गईं, जिनमें 612 ने मंच पर व्यक्तिगत रूप से डिग्री ग्रहण की। इनमें 417 स्नातक, 149 स्नातकोत्तर और 46 पीएचडी शामिल हैं। शैक्षणिक श्रेष्ठता के लिए एम्पएससी (भौतिकी) के कृष्णाशिष मंडल (9.64 सीजीपीए) और बीटेक (इलेक्ट्रिकल) के प्रियांशु राज (9.52 सीजीपीए) को राष्ट्रपति के हाथों स्वर्ण पदक मिला।

आचार्य कुमार स्वामी ने सुनाई परीक्षित की कथा

युद्ध, संघर्ष, सत्ता परिवर्तन, तख्तापलट और अस्थिरता से साल भर जूझती रही दुनिया



नीरज कुमार दुबे

साल 2025 की शुरुआत ही एक बड़े झटके के साथ हुई, जब डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में दोबारा कार्यभार संभाला। उनकी वापसी केवल अमेरिका तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसका असर पूरी दुनिया पर पड़ा।

सल 2025 वैश्विक राजनीति के इतिहास में एक ऐसे वर्ष के रूप में दर्ज हुआ, जिसने यह साफ कर दिया कि दुनिया अब स्थिरता की ओर नहीं, बल्कि अस्थिरता, टकराव और सत्ता संघर्ष की ओर तेजी से बढ़ रही है। यह साल लोकतंत्र और तानाशाही, शांति और युद्ध, संवाद और टकराव के बीच की रेखाओं को और धुंधला कर गया। कहीं चुनावों के जरिए सरकारें बदलीं, कहीं बंदूकों की नली से सत्ता हथियार्य गई, तो कहीं युद्ध और सीमित संघर्षों ने मानवता को एक बार फिर कठघरे में खड़ा कर दिया।

2025 की शुरुआत ही एक बड़े झटके के साथ हुई, जब कार्यालघ ट्रंप ने अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में दोबारा कोनाबल में संभाला। उनकी वापसी केवल अमेरिका तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसका असर पूरी दुनिया पर पड़ा। ट्रंप का दूसरा कार्यकाल पहले से कहीं अधिक आक्रामक, राष्ट्रवादी और टकरावपूर्ण नजर आया। उनकी नीतियों ने वैश्विक व्यापार, सुरक्षा गठबंधनों और कूटनीतिक संतुलन को खलबखल दिया। अमेरिका की विश्व नीति फिर से हूअमेरिका फोस्टैंड की राह पर लौटती दिखी, जिससे यूरोप से लेकर एशिया तक सहयोगी देशों में असहजता बढ़ी। ट्रंप की शैली ने मित्र देशों को भी यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि अमेरिका अब भरोसेमंद साझेदार न रहा है। इसके अलावा, 2025 में कई देशों में नई सरकारों का गठन हुआ। कुछ देशों में यह सत्ता परिवर्तन लोकतांत्रिक प्रक्रिया का परिणाम था, तो कुछ जगहों पर राजनीतिक अस्थिरता की देन। अफ्रीका, यूरोप और प्रशांत क्षेत्रों के कई छोटे-बड़े देशों में चुनावों के बाद नए नेतृत्व सामने आए। इन सत्ता परिवर्तनों ने यह दिखाया कि लोकतंत्र अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है, लेकिन यह भी उतना ही स्पष्ट हुआ कि लोकतांत्रिक संस्थाएं दबाव में हैं। कई देशों में कमजोर जनान्देश, बिखरी संसद और अस्थिर गठबंधन सरकारों ने शासन को चुनौतीपूर्ण बना दिया। हम आपको बता दें कि जहाँ कुछ देशों ने चुनावों का रास्ता चुना, वहीं 2025 तख्तापलटों का भी गवाह बना। अफ्रीका के कुछ हिस्सों में सेना ने लोकतांत्रिक सरकारों को हटाकर सत्ता अपने हाथ में ले ली। सत्ता परिवर्तन की यह प्रवृत्ति खासतौर पर उन क्षेत्रों में दिखी, जहाँ पहले से ही राजनीतिक अस्थिरता, गरीबी और आतंकवाद मौजूद था। सेना द्वारा कई देशों में सत्ता पर कब्जा यह संकेत देता है कि कई देशों में लोकतंत्र अभी भी जड़ें नहीं जमा पाया है। अंतरराष्ट्रीय



समुदाय की चेतावनियों और प्रतिबंधों के बावजूद तख्तापलटों का सिलसिला यह सवाल खड़ा करता है कि क्या वैश्विक व्यवस्था वास्तव में लोकतंत्र की रक्षा करने में सक्षम है?

इसके अलावा, साल 2025 में दक्षिण एशिया को उथल-पुथल की कहानी में नेपाल एक अहम उदाहरण बनकर सामने आया, जहाँ सत्ता परिवर्तन की पटकथा किसी राजनीतिक दल ने नहीं, बल्कि जे-जी आंदोलन ने लिखी। बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, महंगाई और अवसरों की कमी से त्रस्त युवा पीढ़ी ने सड़कों पर उत्तरकथ परंपरिक राजनीति को खींचे चुनौती दी। शोशल मीडिया से शुरू हुआ यह आंदोलन देखी-देही-देखत जनआक्रोश में बदल गया, जिसमें सरकार की नींव हिला दी। प्रदर्शन इतने व्यापक और उग्र हुए कि सत्ता प्रतिष्ठान को झुकना पड़ा और अंततः सरकार गिर गई। नेपाल का यह घटनाक्रम इस बात का संकेत बना कि अब सत्ता परिवर्तन केवल संसद या बंदूक से नहीं, बल्कि डिजिटल पीढ़ी की संगठित अवसाद से भी संभव है। यह आंदोलन केवल सरकार विरोधी नहीं था, बल्कि दशकों से जमी हुई राजनीतिक जड़ता और वंशवादी राजनीति के खिलाफ खुला विद्रोह था, जिसने पूरे क्षेत्र को यह चेतावनी दी कि युवा पीढ़ी को नजरअंदाज करना अब सत्ता के लिए सबसे बड़ा खतरा बन चुका है।

समेटा जाए तो वह शब्द है संघर्ष। वह वर्ष दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में सुलगती सीमाओं, टूटते समझौतों और बढ़ते सैन्य उत्करावों का गवाह बना। दक्षिण एशिया से लेकर मध्य पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया तक, शांति केवल कागजों में सिमट कर रह गई। भारत और पाकिस्तान के बीच सैन्य आतंक और तनाव पूर्व साल बना रहा। पहलवाना अकारकवादी हमले के बाद शुरू हुए ऑपरेशन सिंदूर ने वहम स्थिर कर दिया कि दोनों परमाणु संपन्न देशों के बीच किन्तु नानुजक स्थिति है। वहीं पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच सीमा संघर्ष ने क्षेत्रीय अस्थिरता को और गहरा किया, जहाँ आतंकवाद, शरणार्थी संकट और सैन्य झड़पें एक-दूसरे में घुलती रही।

साथ ही दक्षिण-पूर्व एशिया में दुनिया ने एक अप्रत्याशित मोर्चा खुलते देखा, जब थाईलैंड और कंबोडिया के बीच सीमा तय छिड़ गया। यह संघर्ष इस बात का संकेत था कि क्षेत्रीय विवाद, जो वर्षों से देबे हुए थे, अब खुलकर हिंसक रूप लेने लगें हों। वहीं मध्य-पूर्व में इजराइल और हमास के बीच संघर्ष ने भयावह मानवीय संकट को जन्म दिया। गाजा पट्टी युद्धभूमि में तब्दील होती रही, जहाँ हवाई हमले, रॉकेट फायरिंग और जमीनी कार्रवाई ने हजारों निर्दोष लोगों की जान ली। यह संघर्ष केवल क्षेत्रीय नहीं रहा, बल्कि वैश्विक राजनीति और कूटनीति को भी गहरे स्तर पर प्रभावित करता रहा।

इसके अलावा, मध्य-पूर्व में तनाव और गहरा हुआ। ईरान और इजराइल के बीच प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष संघर्ष ने पूरे क्षेत्र को युद्ध के मुहाने पर ला खड़ा किया। मिसाइल हमले, हवाई हमले और सैन्य चेतावनियों ने यह साफ कर दिया कि एक चिंगारी पूरे क्षेत्र को आग में डोंक सकती है।

इसके अलावा, यूक्रेन और रूस के बीच जारी युद्ध 2025 में भी थमता नजर नहीं आया। यह संघर्ष केवल दो देशों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यूरोप की सुरक्षा, ऊर्जा आपूर्ति और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर इसका सीधा असर पड़ा। साथ ही अफ्रीका के सहेल क्षेत्र में चरमपंथी हिंसा और गृहयुद्ध जैसी स्थितियां बनी रहें, जहाँ आम नागरिक सबसे बड़े शिकार बने।

इसी तरह बांग्लादेश में आंतरिक राजनीतिक संघर्ष और हिंसा ने यह दिखा दिया कि लोकतांत्रिक ढाँचे के भीतर पनपने वाले टकराव भी किस तरह देश को अस्थिर कर सकते हैं। विरोध-प्रदर्शन, राजनीतिक टकराव और अल्पसंख्यकों के साथ बर्बरता ने सामाजिक ताने-बाने को कमजोर किया।

देखा जाये तो इन सभी संघर्षों ने 2025 में यह साफ कर दिया कि दुनिया किसी एक महायुद्ध की ओर नहीं, बल्कि एक साथ कई छोटे-छोटे युद्धों और स्थायी अस्थिरता की ओर बढ़ रही है। यह वह दौर है जहाँ सीमाएं बारूद बन चुकी हैं और शांति सिर्फ भाषणों तक सिमट गई है।

इसके अलावा, जहाँ दुनिया संघर्ष और अस्थिरता से जूझ रही थी, वहीं डोनाल्ड ट्रंप 2025 के सबसे चर्चित नेताओं में से एक बन रहे। हालाँकि उनकी लोकप्रियता सर्वसम्मत नहीं थी। एक ओर उनके समर्थक उन्हें मजबूत, निर्भीक और राष्ट्रवादी नेता मानते रहे, वहीं दूसरी ओर आलोचक उन्हें विभाजककारी और संस्थाओं को कमजोर करने वाला नेता बताते रहे। ट्रंप की लोकप्रियता दरअसल इस बात का प्रतीक बनी कि दुनिया भर में राजनीति अब सहमत नहीं, बल्कि ध्वजिकरण से चल रही है।

बहरहाल, 2025 ने यह साफ कर दिया कि दुनिया अब अपने संतुलन की ओर नहीं लौटने वाली। सत्ता परिवर्तन, पुर्णतया टुटने, युद्ध और वैचारिक टकराव आने वाले वर्षों की भूमिका लिख चुके हैं। यह साल इस सच्चाई का आईना बन गया कि शांति अब अपवाद बनती जा रही है और संघर्ष नई सामान्य स्थिति। यदि वैश्विक नेतृत्व ने समर्थ रहते संवाद, कूटनीति और सहयोग का रास्ता नहीं चुना, तो 2025 आने वाले बड़े संकटों की शुरुआत साबित होगा।

संपादकीय

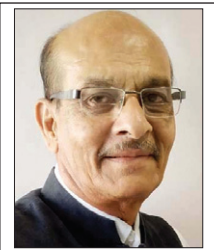
वोटर के अहम विरोधाभास

देश के 12 राज्यों और संघशासित क्षेत्रों में चुनाव आयोग ने मतदाता सूचियों के शुद्धिकरण के लिए 'विशेष गहन पुनरीक्षण' (एसआईआर) का अभियान चलाया था। कुल 51 करोड़ मतदाताओं का पुनरीक्षण किया जाना था। एसआईआर की प्रक्रिया के बाद 6.57 करोड़ मतदाताओं के नाम सूचियों से काट दिए गए। यह बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण आंकड़ा है। दो विरोधाभासी तत्वों पर सामना आइ है। देश के सबसे बड़े राज्य उप्र में ही 2.89 करोड़ मतदाताओं के नाम काटे गए हैं, जबकि उप्र में भाजपा की सरकार है। इसके उलट असम में 2001 के बाद 1 करोड़ से अधिक मतदाता बढ़ गए हैं। वहां की मतदाता सूची के ड्राफ्ट में 2 करोड़ 52 लाख 02775 मतदाता जर्न किए गए हैं। 2021 के बाद से 18 लाख से अधिक मतदाता बढ़े हैं, जबकि पुनरीक्षण के दौरान 10.6 लाख नाम अंकित किए हैं। गौरतलब यह है कि 93021 मतदाताओं को हार्दिक श्रेणी में रखा गया है। उन 'संदेहास्पद' नामों की भी मतदाता सूची में शामिल किया गया है, लेकिन वे तब तक वोट डालने के 'अपात्र' रहेंगे, जब तक उनकी भारतीय नागरिकता घोषित नहीं हो जाती। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा का बयान संवेदनशील और चेतनाहीनपूर्ण है कि राज्य में बांग्लादेश मूल के लोगों की संख्या 40 फीसदी को पार कर चुकी है। यदि उनकी आबादी 50 फीसदी से अधिक हो गई, तो वे असम राज्य के बांग्लादेश में विलय की साजिश रच सकते हैं। ऐसी कोशिशें भी जारी हैं। सवाल है कि उप्र में जो 2.89 करोड़ नाम काटे हैं और असम में जो 18 लाख से ज्यादा मतदाता बढ़े हैं, क्या वे बांग्लादेशी अथवा रोहिंग्या चुम्पेपैठिए हैं? चुनाव आयोग स्पष्ट क्यों नहीं करता? जिन मतदाताओं की मौत हो चुकी है, उनकी संख्या स्पष्ट है और वे नाम मतदाता सूचियों से बाहर किए जाने चाहिए, लेकिन चुनाव आयोग ने जिन मतदाताओं को मिसिंग, लापता, गायब, पते पर गैरहाजिर और संदेहास्पद करार दिया है, उनके आधार क्या है? क्या उनकी नागरिकता भी सवालिया है? बेशक नागरिकता का संवैधानिक अधिकार चुनाव आयोग के पास नहीं है। वह हुए मंत्रालय का विशेषाधिकार है, लेकिन जिन मतदाताओं को मिसिंग या शिफ्ट करार दिया गया है, उनका मताधिकार तो सुरक्षित है न? वे देश में जहां भी होंगे, क्या वहां के मतदाता बना दिए जाएंगे अथवा वे अनाथ हो जाएंगे? कमोबेश सभी में मताधिकार मौलिक अधिकार है और उसे कोई भी सरकार या चुनाव आयोग छीन नहीं सकता।

चिंतन-मनन

मानव जीवन की गरिमा

मालदा तक्षशिला जैसे अनेक विश्वविद्यालय इस देश में थे। देश की शिक्षा व्यवस्था की पूर्ति तो स्थानीय गुरुकुल ही कर लेते थे। उच्च स्तरीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था का प्रबंध यह विश्वविद्यालय ही करते थे। देश-देशगारों की भाषाएँ वहाँ पढ़ाई जाति थीं, जिनमें पराग होकर अपने को विश्व सेवा के लिए समर्पित करने वाले महामानव विश्व के कोने-कोने में पिछड़े क्षेत्रों को पिछड़े वर्गों को हर दृष्टि से उंचा उठाने के लिए अपनी अहेतुक सेवा भावना की अजस्र यत्रा करते थे। न केवल धर्म और अध्यात्म वन कृषि, पशुपालन, वृक्षारोपण, शिल्प उद्योग, नौकानयन, चिकित्सा, वास्तु, रसायन आदि भौतिक विज्ञान की अनेकानेक धाराओं से संसारवासियों को परिचित प्रवीण कराने के लिए अथक परिश्रम किया गया। फलतः मानव जाति को अपनी पिछड़ी हुई, अभावग्रस्त एवं विपन्न स्थिति से छुड़का मिली। अनु, वपुषि नवस और शिक्षा की आर्थिक आवश्यकताएँ पूरी होने पर प्रगति के अन्यान्य मार्ग खुले। मनुष्य जीवन की गरिमा दो पहलियों के रथ पर चढ़कर गतिशील होती है। एक पहिया है अतन् निर्माण, दूसरा लोक-निर्माण। यही दो लक्ष्य भारतीय संस्कृति के नेवसाँ अविनाश अंग रहे हैं। गुण, कर्म, स्वभाव की दृष्टि से इस देश के निवासियों पर प्रयत्नशील रहें कि उनका व्यक्तित्व सद्भावनाओं और सत्यवृत्तियों से परिपूर्ण हो। उसे आदर्श और अनुकरणीय माना जाए। यही थी उन दिनों व्यक्तिगत जीवन की आध्यात्मिक महात्वाकांक्षा। भौतिक दृष्टि से हर व्यक्ति समुन्नत, सुव्यवस्थित और साधन संपन्न जीवन जीता था और उत्कृष्ट चिंतन और आदर्श कर्तव्य हर किसी के लिए प्रगति का मापदण्ड बना हुआ था। भारतीय जीवन का दूसरा लक्ष्य था- लोक निर्माण। वह मनुष्य क्या जो अपनी उपलब्धियों से केवल अपने शरीर और परिवार को ही लक्ष्य बना कर पड़े। पीड़ा और पतन के गर्त से गिरें हुए- पिछड़े हुए और असम्पन्न लोग जिससे कुछ भी प्रकाश प्राप्त सहयोग प्राप्त न कर सकें। उन दिनों यही लोक मान्यता थी कि हर समुन्नत व्यक्ति को अपनी सम्पत्ति एवं विभूतियों को एक बड़ा भाग समाज की उन्नति में-सुख शांति की अभिवृद्धि में लगाना चाहिए। आत्मोत्कर्ष की तरह लोक कल्याण भी मनुष्य का लक्ष्य होना चाहिए। प्राचीन काल में प्रत्येक भारतवासी की वैसी मान्यता, निष्ठा और रीति-नीति थी।



सनत जैन

लो कतत्र की नींव निष्पक्ष और विश्वसनीय चुनावी प्रक्रिया पर टिकी होती है। इस प्रक्रिया की पहली और सबसे महत्वपूर्ण कड़ी मतदाता सूची है, क्योंकि यदि मतदाता सूची पूर्ण ववाहित हो जाए, तो चुनाव की वैधता पर प्रश्नचिह्न लगाया स्वाभाविक है। पश्चिम बंगाल में चुनाव आयोग द्वारा कराए जा रहे विशेष गहन पुनरीक्षण (रेस्पेक्टिव रिवीजिंग एंड एसआईआर) को लेकर चुनाव कार्य में लगे प्रशासनिक अधिकारियों की अपेक्षा ने एक बार फिर चुनाव आयोग को लेकर प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। पश्चिम बंगाल सिविल सर्विस ऑफिसर्स एसोसिएशन राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी को लिखा गया पत्र साधारण प्रशासनिक शिकायत नहीं है, बल्कि यह चुनावी व्यवस्था के भीतर बढ़ते केन्द्रिकरण और अनैतिक-आधारित प्रक्रिया एवं निष्पक्षता पर गंभीरतापूर्वक है। अधिकारियों का कहना है कि मतदाता सूची में नाम जोड़ने या हटाने का अधिकार निर्वाचन कानूनों के अनुसार निर्वाचन रजिस्ट्रिकरण अधिकारी (आईआरओ) के पास होता है, लेकिन ऐसा आईआरओ जोड़ना प्रक्रिया में वैधानिक भूमिका को चुनाव आयोग



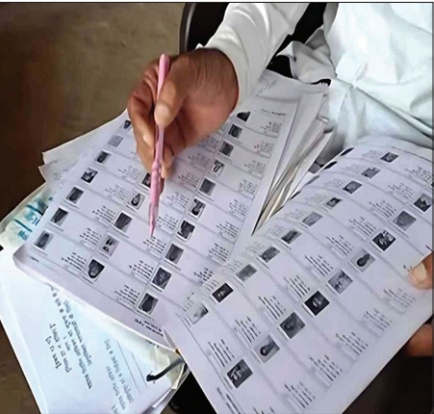
कांतिलाल मांडोत

आधुनिकता की तेज रफ्तार भागदौड़ भरि ज़मीन और पाश्चात्य खान-काफ़ी की नकल ने बीते कुछ दशकों में भारतीय समाज की भोजन परंपरा को गहराई से प्रभावित किया है। फास्ट फूड, रेफ़ाईंड आटा, अत्यधिक चीनी और वसा से भरपूर भोजन ने स्वाद तो बढ़ाया, लेकिन इसके साथ-साथ शरीर को एक ऐसे बीमारियों की सौगात भी दे दी है, जिनका नाम पहले गॉन्ग-कस्बों में शायद ही सुनाई देता था। डायबिटीज, मोटापा, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप और पाचन संबंधी समस्याएँ आज आम जीवन का हिस्सा बन चुकी हैं। इसी पृष्ठभूमि में अब एक सुखद बदलाव दिखाई दे रहा है लोग अपनी थाली में फिर से मोटे अनाज को जगह देने लगे हैं। यह बदलाव केवल एक ट्रेंड नहीं, बल्कि सेहत, संस्कृति और आत्मीयता के लिए और लौटने का संकेत है।

कुछ दशक पहले तक मोटे अनाज भारतीय रसोई का प्राथमिक हिस्सा थे। बाजरा, ज्वार, रागी, कंगनी, अमका और कौशो जैसे अनाज केवल भोजन नहीं थे, बल्कि जीवनशैली का हिस्सा थे। ग्रामीण समाज में अनेकतन-मजदूरी करने वाले लोग इन्हीं अनाजों से ऊर्जा प्राप्त करते थे और दिनभर काम करने के बावजूद थकान कम महसूस होती थी। उस समय डायबिटीज या कोलेस्ट्रॉल जैसे शब्द आम बात के नहीं आते थे। पुराने लोग भले ही ओषध के वैज्ञानिक शब्दों से परिचित न हों, लेकिन अनुभव से जानते थे कि कौन

न अवैध रूप से सीमित कर दिया है। सबसे गंभीर आरोप यह है कि केंद्रीय चुनाव आयोग के एक केंद्रीयतन्त्र-निर्देशक के निर्देशानुसार सिस्टम के माध्यम से सीधे वोटर के नोटिस-जर्नेल पर किए जा रहे हैं। कई उम्मीदवारों के लॉग-इन पहले से तैयार नोटिस दिखाई दे रहे हैं, जिससे यह व्यवस्था करने की स्वतंत्रता उम्मीदवारों की समाप्त हो गई है। किसी मामले में नोटिस जार किया जाए और किसमें सुनवाई आवश्यक है। इस प्रक्रिया को प्रेक्षा-निर्देशन में हस्तगत कर लिया है। यह स्थिति केवल प्रशासनिक अधिकारों के अंतर्गत सीमित नहीं है, बल्कि इसके दुरुपयोगी लोकतांत्रिक परिणाम हो सकते हैं। बड़ी संख्या में मतदाताओं के नाम केंद्रीय पोर्टल के माध्यम से हटाए जाते हैं, तो आम जनता का रोष सीधे बीएलओ और ईआईओ पर गिरना जवाबिक वास्तविक निर्णय प्रक्रिया में उनकी भूमिका को नकारता है। इससे स्थानीय अधिकारियों की निष्पक्षता पर सवाल उठाने हैं। चुनाव कार्य में लगे प्रशासन और जनता के बीच अविश्वास की खाई और गहरी हो गई है। एसोसिएशन ने अपने पत्र में ठीक ही कहा है कि एसआईओ और जैसी संवेदनशील प्रक्रिया में केन्द्रीयकृत सॉफ्टवेयर आधारित निर्णय खतरनाक हो सकता है। तकनीकी प्रक्रिया को सुगम बना सकती है, लेकिन वह मानवीय विवेक, सामाजिक संदर्भ मतदाता के अधिकार और जमीनी सच्चाई का विकल्प नहीं माना जाएगा। मतदाता सूची से किसी का नाम हटाना केवल एक एक तकनीकी कार्रवाई नहीं, बल्कि नागरिक के संवेधानिक अधिकारों को प्रभावित करने वाला निर्णय प्रक्रिया है। ऐसे में पारदर्शी सुनवाई और स्थानीय स्तर पर जांच के बाद ही कार्रवाही होनी चाहिए।

में संभावित हेफेर से जोड़कर देख रहे हैं। विपक्षी दल चुनाव आयोग की मंशा पर सवाल उठा रहे हैं। दूसरी ओर, चुनाव आयोग की चुप्पी इस दृष्टिकोण को और मजबूत बनाती है। चुनाव आयोग की विधेयसमिति बनाए रखने के लिए निष्पक्ष होना और निष्पक्ष दिखाई देना भी उसका ही जरूरी है। केन्द्रीय चुनाव आयोग द्वारा चुनाव प्रक्रियाओं का विभिन्न साप्ताचेय के माध्यम से केन्द्रीकरण, संघीय ढाँचे और स्थानीय प्रशासन की भूमिका को कमजोर कर रहा है? भारत जैसे संघीय विविधतापूर्ण देश में, जहाँ सामाजिक और भौगोलिक परिस्थितियाँ क्षेत्र-दर-क्षेत्र भिन्न हैं, वहाँ स्थानीय अधिकारियों की भूमिका को दबाना करना स्वाभाविक नहीं है। केन्द्रीय चुनाव आयोग गैरकानूनी काम कर रहा है। चुनाव आयोग को चाहिए कि वह लोकप्रिय नजरअंदाज न करे। ईआरओ को उनकी वैधानिक शक्तियाँ लौटाना किसी भी मद्दत के नाम का डिग्लिशन से पहले अनिवार्य सुनवाई सुनिश्चित करना और साप्ताचेय को सहायक उपकरण के रूप में मान्य करना ही निष्पक्ष चुनाव की गारंटी है। मतदाता सूची की शुद्धता, मार्गाधिकार तथा चुनावों की निष्पक्षता किसी एक संस्था की नहीं, बल्कि संवैधानिक अधिकार और लोकतंत्र की जिम्मेदारी है। यदि प्रशासनिक अधिकारों ही प्रक्रिया की पारदर्शिता पर सवाल उठाने लेंगे, तो उसे चेतावनी की खतरे की सीटी समझना चाहिए। एसआईआर का उद्देश्य वास्तव में लोकतंत्र को मजबूत करना है, तो उसे विश्वास, पारदर्शिता और संवैधानिक मूल्यों से सचा लागू करना ही होगा। पिछले कुछ वर्षों में चुनाव आयोग डिजिटल उपकरणों, साप्ताचेय तथा हाइड्रिक का उपयोग बड़े पैमाने पर कर रहा है।



मतदाता सूची बनाने, मतगणना के परिणाम एवं अन्य कार्य-केंद्रीय चुनाव आयोग कर रहा है। सॉफ्टवेयर एवं उपकरणों के बारे में चुनाव आयोग राजनैतिक दलों एवं मतदाताओं को विश्वास में नहीं ले रहा है। केंद्रीय चुनाव आयोग हर मामले में चुपि साध लेता है। जिस कारण के अधिकार जिले के अधिकारियों के पास है, उन्हें बाय-पास करके उनके अधिकार केंद्रीय चुनाव आयोग के अधिकारी अवैधानिक रूप से उपयोग कर रहे हैं। यह एक अपराध है। प्रशासनिक अधिकारियों एवं राज्य सरकारों को भी सजग रहने की जरूरत है। वहीं मतदाता के सवैधानिक अधिकार खत्म हो रहे हैं। ऐसी दशा में मतदाता को अपने अधिकार के लिए सड़कों पर आना होगा। चुनाव आयोग की चुपि यह साबित करती है, वह अब निष्पक्ष नहीं, बल्कि पक्षपाती के रूप में कार्य कर रही है। चुनाव आयोग को गंभीरता से विचार करना होगा।

पाश्चात्य कल्चर छोड़ थाली में लौटती परंपरा, मोटे अनाज से आधुनिक रोगों तक का समाधान

सा अनज शरीर को ताकत देता है और कौन-सा भोजन मौसम के अनुकूल है। उनकी पसंद में स्वाद से अधिक महत्व तुल्य और स्वास्थ का होता था। समय बदला तो पसंद भी बदली। शहरीकरण, मशीनों पर निर्भरता और विज्ञापन आधारित संस्कृति ने भोजन को सुविधा और स्वाद तक सीमित कर दिया। सफेद आटा, पॉलिश किया हुआ चावल और पैकेटबंद खाद्य पदार्थ प्रतियक्षा और औपनिर्कता का प्रतीक बन गए। मोटे-अनाज, रिजेंड कभी गरीबों का भोजन कहा गया, धीरे-धीरे रसोई से बाहर होते चले गए। नई पीढ़ी की पसंद में पिज्जा, बर्गर और नुल्लस शामिल हो गए, जबकि बाजरे की रोटी या ज्वार की भाखुरी पिछड़ेपन की निशानी मानी जाने लगी। यही वह दौर था जब शरीर में असंतुलन बढ़ा और जीवनशैली से जुड़ी बीमारियां जंग से फैलने लगीं।

आज स्थिति एक बार फिर करवट ले रही है। जब दवाइयों पर बढ़ता खर्च और लगातार विषाडुती सेहत बिता का कारण बनी, तब लोगों ने अपने भोजन पर पुनर्विचार करना शुरू किया। विशेषज्ञों और डॉक्टरों की सलाह, शोध रिपोर्ट्स और पारंपरिक ज्ञान के पुनर्मूल्यांकन ने मोटे अनाज की फिर से चर्चा के केंद्र में ला दिया। प्रशानमौली नेरेंद्र मोदी के आह्वान के बाद मोटे अनाज को वैश्विक मंच मिला और 'इंटरनेशनल डेयर ऑफ़ मिलेट्स' जैसी पहल ने इसे नई पहचान दी। इसका प्रभाव यह हुआ कि जो अनाज कम गैरों तक सीमित थे, वे अब शहरी हार्ड-मार्ट और सुपरमार्केटों की शोल्फ पर भी सामान्य के साथ नजर आने लगे हैं। स्वास्थ्य के नजरिए से देखें तो मोटे अनाज किसी वरदान से कम नहीं हैं। इनमें फाइबर की मात्रा अधिक होती है, जिससे पाचन क्रिया बेहतर रहती है और पेट लंबे समय तक भरा हुआ महसूस करता है। इनका ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम होने के कारण रक्त में शर्करा धीरे-धीरे बढ़ती है, जिससे डायबिटीज के मरीजों को विशेष लाभ मिलता है। विशेषज्ञों के अनुसार, यदि मनुष्य में पीड़ित व्यक्ति नियमित रूप से मोटे अनाज

को अपने आहार में शामिल करता है, तो उसे दवाइयों की आवश्यकता भी कम हो सकती है। जेजुलान् मेडिकल कॉलेज, अजमेर के मेडिसिन विभाग से जुड़े डॉ. पवन कुमारचौधरी का मानना है कि मोटे अनाज का धीमा पाचन शरीर में ऊर्जा को संतुलित रूप से रिलीज करता है, जिससे अचानक भूख लगने की समस्या कम होती है और वजन नियंत्रण में रहता है।

पुराने लोगों की पसंद और आज की पीढ़ी को पसंद में यही मूल अंतर दिखाई देता है। पहले भोजन का उद्देश्य शरीर को पोषण देना और काम करने की शक्ति प्रदान करना था, जबकि आज भोजन अक्सर स्वाद, त्वरित उपलब्धता और दिखावे से जुड़ गया है। हालांकि अक्सर नई पीढ़ी में भी एक वज्र ऐसा है, जो अपने पूर्वजों की समझ को फिर से अपनाते लगा है। ये वह समझने लगे हैं कि असली आधुनिकता वही है, जो शरीर और प्रकृति दोनों के साथ संतुलन बनाए। योग, ऑर्गेनिक खेती और देशी खाद्य-पान की ओर बढ़ता रझान इसी सोच का परिणाम है।

मोटे अनाज केवल स्वास्थ्य तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह किसानों और पर्यावरण के लिए भी लाभकारी हैं। ये फसलें कम पानी में उग जाती हैं और कठिन जलवायु परिस्थितियों में भी अच्छी पैदावार देती हैं। राजस्थान जैसे शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों के लिए यह अनाज सदियों से जीवनरेखा रहे हैं। राज्य सरकार द्वारा राजस्थान मिलेट्स प्रोत्साहन मिशन के तहत किसानों को मुक्त बीज किट उपलब्ध कराना इस दिशा में एक सकारात्मक कदम है। इससे न केवल किसानों की आय बढ़ेगी, बल्कि स्थानीय स्तर पर पोषण सुरक्षा भी मजबूत होगी।

बाजार में आए बदलाव ने भी मोटे अनाज को अपना आसन बना दिया है। पहले इन्हें साफ करने और पीसने में काफी मेहनत लगती थी, जिससे शहरी और कामकाजी लोग इससे दूरी बनाए रखते थे। अब चक्कियों और प्रोसेसिंग यूनिट्स में तैयार आटा आसानी से उपलब्ध है। लोग अपनी आवश्यकता के

अनुसार मात्रा तब कर सकते हैं और बिना अतिरिक्त झंझट के इसे दैनिक आहार में शामिल कर सकते हैं। यही सुविधा आज की जीवनशैली के साथ परंपरा का सेतु बन रही है।

स्वास्थ्य विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि मोटे अनाज हृदय रोगों के जोखिम को कम करते हैं। इनमें मौजूद मैग्नीशियम, आयरन और प्रोटीन/आर्कसीडेंट तत्व रक्त-संचार को बेहतर बनाते हैं और कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित करने में सहायक होते हैं। महिलाओं और बच्चों के लिए यह पोषण का सशक्त स्रोत है, क्योंकि इनमें कैल्शियम और प्रोटीन पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। रागी जैसे अनाज हड्डियों को मजबूत बनाते हैं। महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो आज के समय में एक बड़ी जरूरत बन चुकी है।

आज की पीढ़ी की पसंद में जो बदलाव दिख रहा है, वह केवल मजबूती नहीं बल्कि समझ का परिणाम है। लोग यह महसूस करने लगे हैं कि महंगे सुपरफूड्स की तलाश में विदेशों की ओर देखने से बेहतर है कि अपनी मिट्टी में उगे अनाज को अपनाया जाए। यह आत्मनिर्भर भारत की सोच के भी अनुरूप है। जब हम अपने पारंपरिक भोजन को अपनाते हैं, तो न केवल अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखते हैं, बल्कि स्थानीय किसानों, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण को भी मजबूती देते हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि मोटे अनाज की वापसी अतीत की ओर लौटना नहीं, बल्कि भावस्थ की ओर एक समझदारी भरा कदम है। पुराने लोगों को असंदेह अनुभव से उपजी थी और आज की पीढ़ी को पसंद ज्ञान और शोध से आकार ले रही है। जब दोनों का संगम होता है, तो एक ऐसी जीवनशैली सामने आती है जो स्वाद, सेहत और संतुलन तीनों को साथ लेकर चलती है। थाली में मोटे अनाज की मौजूदगी केवल भोजन का विकल्प नहीं, बल्कि एक स्वस्थ, जागरूक और आत्मनिर्भर समाज की पहचान बन सकती है।

It’s time to bury the shovel and fill the hole

The death certificate of the Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act (MGNREGA), 2005, was signed without much fanfare in December 2025, replaced by the brand-new Viksit Bharat-Guarantee for Rozgar and Ajeevika Mission (Gramin) Act (VB-G RAM G), 2025, a title so long it requires its own administrative department to pronounce. For two decades, we operated under the collective delusion that the height of human aspiration for a rural Indian was to spend a hundred days a year under a scorching sun, moving earth from one spot to another. The 2005 Act was born out of a noble impulse to prevent starvation, but it quickly devolved into a state-sponsored ritual of stagnation. We called it a “right-based” revolution, yet for millions, it became a trap—a ceiling that prevented them from ever looking beyond the bottom of a half-dug trench. We have spent billions of rupees over 20 years to ensure that our rural population remains exactly where they are: unskilled, underpaid, and tethered to the whims of a local strongman who decides whose name appears on the muster roll.

When the MGNREGA was first introduced in 2005, it served a vital, albeit grim, purpose. It was the floor that prevented the poorest from falling into the abyss during the lean seasons. It gave women a semblance of financial independence and forced private landlords to pay a slightly less insulting wage. In the early years, you could see the impact in the reduced distress migration and the sense of agency it provided to the landless. It was a social safety net in a country that had none, a temporary bridge designed to carry the vulnerable until the “real” economy could reach them. We measured success in “person-days,” a cold, mechanical metric that prioritised the quantity of sweat over the quality of life. It was the ultimate palliative for a government that couldn’t figure out how to create real jobs, so it decided to manufacture work instead. However, the dark side of this “guarantee” was a systemic rot that turned a safety net into a communal cesspool of wasted potential. By the mid-2020s, the scheme had become synonymous with “digging holes and filling them back up.” We created thousands of “assets”—unpaved roads that vanished in the first rain, ponds that couldn’t hold water, and plantations that existed only on paper. The irony is that while we were paying people a pittance to perform primitive manual labour, the world around them was undergoing a technological explosion. We made our people “lazy” not because they didn’t want to work, but because we gave them no incentive to learn. Why would a young man in a village spend time learning to repair a solar pump or code a basic app when the government was offering a guaranteed, albeit miserable, wage for moving mud? We effectively subsidised low productivity and institutionalised a lack of ambition, creating a labour scarcity in productive agriculture while our industrial growth choked for want of skilled hands. Now, as the calendar turns to the final days of 2025, the new VB-G RAM G scheme promises a “modernised” version of this old nightmare. It ups the ante to 125 days and introduces a “60-day agricultural pause” to ensure that farmers aren’t left stranded during harvest seasons. But the most significant shift is the funding: the Centre is now asking states to cough up 40 per cent of the cost, a move that will likely break the back of already bankrupt state treasuries. While the government touts AI-based monitoring and GPS tracking as the cure for corruption, they are missing the fundamental point. Whether you dig a hole for 100 days or 125, and whether a satellite or a corrupt supervisor watches you do it, the result is the same: you are still just digging a hole. The new scheme is merely a rebranding of the same old apathy, shifting the financial burden to the states while maintaining the same archaic obsession with unskilled manual labour as the primary tool for poverty alleviation.

One-line closer for Pradhan’s lifeline starter

Fossilised colonial frameworks reduced universities to degree dispensing silos than engines of national progress

The Viksit Bharat Shiksha Adhishthan (VBSA) is all set to emerge as an epistemologically audacious and structurally transformative parliamentary missive with a mission to demolish stereotypes entrenched in bureaucratic inertia and regimental strangulation on one hand and to remove intellectual subservience to encourage sovereign excellence on the other through cognitive self-reliance, innovative co-existence, meritocratic leadership, creative pedagogy, all of which is facilitated by cementing and institutionalising a visionary architecture built on responsible autonomy coupled with autogenous discipline triggering the civilisational consciousness to regain the lost geopolitical stewardship through industry-aligned skilling and globally competitive standards capable of dismantling the scaffolds of fossilised colonial frameworks that were once advanced by legacy rent seeking regulatory monopolies and chaotic credentialism reducing universities to degree dispensing silos than engines of national progress with the Bill decisively integrating accountability and transparency linked with performance metrics to hopefully reward intellectual rigour, multi-disciplinary research, innovative entrepreneurship and societal impact, thereby enabling higher education institutions (HEIs) as catalysts of change by leapfrogging into an era of authoritative participation in global knowledge commons, grounding indigenisation, constitutional canulation, traditional continuum alongside emerging and frontier domains of science and technology embracing Artificial Intelligence, Bio-Nano, Cybeyondphysical, Digital, Electronics, Energy and Environment (ECube), etc. that blends contemporaneous curriculum with ancient wisdom in a manner that is neither nostalgic nor derivative but boldly original to empower original thinking amongst learners who shall become active epistemic agents rather than passive recipients in a manner that is flexible, modular, multi-lingual, experiential and aligns with the career aspirations of the world’s largest demographic capital capable of oxygenating Bharat from strangulating suffocation supported by academic freedom, competitive compensation, sumptuous research endowments, elevated collaborations that restore teaching and scholarship to unimaginable positions of dignity and influence that can steer mission-driven centres of excellence supported by government grants, corporate philanthropy, virtuous cycle of intellectual property-based wealth creation through discoveries of massive societal impact, particularly in marginalised regions and hitherto unchartered territories of academic disciplines driving home the strong and sound message

that equity is not by dilution of standards but by expansion of opportunities and positive disruption through digital public infrastructure, open learning resources, skilling and capacity building that futureproof higher education canvas against socio-econo-geographical pressures and parading Bharat’s most strategic human assets in pursuit of excellence and resilience to charter the nation’s destiny through a robust higher education ecosystem that shall not be built by administrative appendages but by pillars of crucible ideas, character and leadership studded with visionary

individually satisfying and collectively purposeful to maximise learning outcomes which was a challenging task considering the diverse complexities that pushed back any creative polity and policy to meet its own cul-de-sac with VBSA now laying the road for multiple pathways and roadmaps offering different routes and destination points aligned with nation, institution and individual goals being the triple barrelled ammunition that fires the double engine growth towards a singular growth trajectory of developed nation status for Bharat, which is seeing the second coming of her first leadership position



ideals, concerned citizenry, innovative ideation, maximalist outcome based pedagogy, driving the productivity and efficiency of every stakeholder to forcefully dismantle the false dichotomy between excellence and inclusion, autonomy and accountability, heritage and progress, private and public, deemed university and university and a variety of other duel-dual terminological termites that have bitten the system too deep the scars of which shall soon begin to disappear to send a message that Bharat’s time has come through VBSA which is not an incremental reform with plug and play imported templates but a self-authored charter code that programs all forms of systems into a uniform yet diverse system of thinking accommodating diverse needs of all participants in a manner that is both

as the entire country unites to create a knowledge economy that spurs economic and social growth balancing the multiplying demands of the next generation through a learner-centric common denominator that cuts across all sections in a manner that is holistic, leaving no stones unturned in Bharat’s march towards becoming a global super power on the attainment of Viksit Bharat status by 2047 which will be an epoch for Chiranjeevi Bharat, an epitome of civilisational continuum unparalleled and unbeatable by any civilisation that came and went and will never come in the foreseeable future. By now you would have realised that this is my hat-trick single line article reserving it for the last and in doing so, my year-end one-line closer is dedicated to Pradhan’s lifeline starter. Happy New Year 2026.

Case against Punjab cops: Time for new terms of public engagement

The Tribune Editorial: The alleged assault on a Colonel and his son by Punjab Police officials in March throws up questions on policing methods

Five months after the Punjab and Haryana High Court transferred the probe into the alleged assault on a Colonel and his son in Patiala in March, the Central Bureau of Investigation has submitted a chargesheet against four Punjab Police officials. They have been charged with causing grievous hurt and wrongful restraint. The law will take its own course, but the case throws up probing questions on the policing methods, the often unhinged bravado of those donning the uniform, and a widening public distrust. It also provides an opportunity to re-engage with the citizenry at various levels, and enforce more nuanced ways of conduct and delivery. Recently, a decorated retired General took up cudgels against the threatening and aggressive ways of police escort vehicles. Action followed, but the situation on the ground has hardly changed, and it’s not limited to Punjab. Chandigarh is an outlier where a



citizen’s immediate engagement with an orderly administrative setup helmed by the police happens the

moment one steps out on to the road. It’s a collaborative arrangement that expects discipline, provides the infrastructure for it and leaves little room for flouting rules. Sadly, and inexplicably, not even a modicum of this model has been replicated anywhere in the region. Not even when those tasked with this responsibility — the political and bureaucratic top bosses — get a firsthand experience during their stay and work in the UT. Managing traffic during VIP movement is a perfect test to gauge how trained and empathetic the police force is. The guidelines are meant to cause minimum public inconvenience while ensuring a protective zone. For the commuters, it’s a nightmare. For the constable on the spot, it’s even worse. Cybercrime, gangster modules, drugs — policing is real tough. That’s simply no excuse for not doing it right.

Dhurandhar: 2025’s nationalist narrative catalyst

For decades, Hindi cinema had lived through the boom-bust cycle where two or three massive releases carried the annual load. In 2025, the pattern inverted.

The year ended with a roar on the silver screen and its echo defined everything that followed. The success of Dhurandhar was not only cinematic but civilisational. It did not simply break records. It set the emotional tone of a nation. When audiences rose to their feet as credits rolled on December 5, they were not merely celebrating a film’s craft. They were acknowledging a sentiment that had long been searching for voice.

By its 21st day in theatres, Dhurandhar was reported to have crossed the Rs 1,000-crore milestone worldwide, becoming the highest-grossing Indian film of the year and the fifth-largest success of all time. In its triumph lay the signal that the nationalist mood of India had moved from politics to popular imagination, that cinema audiences had begun dictating the nation’s emotional narrative rather than following it. The country’s biggest industry—long accused of speaking in borrowed accents and cosmopolitan codes—had suddenly begun to reflect the nationalistic mood. What made this moment even more significant was the ecosystem it revealed. Throughout 2025, Hindi cinema experienced what industry analysts called a “steady flow of steady performers”, rather than dependence on blockbuster spectacles. In the first half of the year alone, 17 films crossed the coveted hundred-crore mark at the domestic box office, a dramatic increase from merely 10 such films in the corresponding period of 2024. For decades, Hindi cinema had lived through the boom-bust cycle where two or three massive releases carried the annual load. In 2025, the pattern inverted. The industry witnessed momentum driven not by ‘event cinema’, but by films that connected with audiences through authenticity, emotional honesty and a willingness to address what people actually felt rather than what critics prescribed they should feel. From its first week, Dhurandhar was more than a blockbuster. Its advertising,

tone, dialogues and audience engagement embodied a spirit that was simultaneously defiant and celebratory. It proved that patriotic sentiment could transcend geographical and demographic boundaries. The film’s triumph occurred in a year already marked by significant shifts in storytelling. In February, Chhaava, Vicky Kaushal’s historical action-drama about Maratha warrior Sambhaji, had crossed ‘600 crore at the box office, signalling that Indian history and heroes were no longer marginal subjects but mainstream currency.

Dhurandhar itself justified that symbolism through cinematic craft. It opened with the precision of a military operation and advanced with the momentum of conviction. For an audience long accustomed to irony and moral hesitation, this clarity arrived like relief. People did not quietly consume Dhurandhar—they claimed it as emotional property.

The reasons for this response lay deeper than the screen. For years, Hindi cinema had lost touch with its wider audience precisely because its guardians had misread what that audience wanted. The major production houses and creative communities had circled themselves in cosmopolitan caution. Patriotism was often reduced to background decor or mocked as an outdated reflex. Storytelling had turned into symbolism designed for validation of Western lifestyles and culture rather than emotion at home. When Dhurandhar appeared, it violated that trend with unapologetic enthusiasm. The moment was ripe for such a shift. Since 2019, India’s political and cultural language has undergone steady transformation. The old markers of elite progressivism, urban irony, global aspiration and moral neutrality began to fade as authentic expressions of national sentiment reasserted themselves. In their

place rose a direct and confident nationalism that sought its reflection in culture. Dhurandhar arrived precisely when that mirror was missing.

The earlier success of films such as Uri: The Surgical Strike, The Kashmir Files, and The Kerala Story had hinted at the change; but Dhurandhar institutionalised it. It became not just a film but a launchpad for a new emotional mainstream. Its impact was so pronounced that it seemed to give permission to an entire industry that



had been afraid to speak its own language. A new generation of filmmakers and writers from smaller cities or digital platforms entered the mainstream empowered by the realisation that authenticity could sell and that audiences were hungry for stories that did not ask them to feel ashamed of their own identity. The monopoly of inherited surnames and old networks began to loosen.

Yet, the success of Dhurandhar must not be mistaken for the triumph of aggression. Its achievement lay in articulation, not polemic. The director chose precision over bombast. Every emotional beat was earned rather

than declared. The protagonist’s resilience was depicted not as dominance but as dedication to purpose. The lesson extended beyond cinema: the rising nationalism of 2025 found in Dhurandhar a model of confidence without contempt, of pride without prejudice. The film’s success while maintaining this balance suggested that audiences, too, were more sophisticated than the critics had assumed—capable of appreciating patriotic sentiment without requiring it to harden into hatred. Still, this transformation carries its own challenge. The newfound assertiveness of Hindi cinema must avoid the trap of predictability or formulaic repetition. What will define the decade ahead is not how many nationalistic films are made, but how deeply they explore the human experience within them. Precision of craft should accompany clarity of message. The promise of Dhurandhar was not that every film must shout its identity, but that no film should be afraid of it. The industry must resist the temptation to turn a rediscovery of voice into a new orthodoxy.

By the final quarter of 2025, it was clear that the cultural axis had shifted fundamentally. The very critics who once dismissed such projects as populist or narrowly exclusive were conceding that a new narrative order had emerged. In hindsight, the year will be remembered not only for Dhurandhar’s record-breaking success but for how it redefined cinematic legitimacy. The old hierarchy of taste, the circle of directors, critics and producers who mediated what India should feel lost its influence. The local triumphed over the global not because it shut out the world, but because it spoke from the depth of belonging. Certainty replaced confusion as the artistic mood of the year.

Gold & Silver prices hit new highs: Experts' forecast for 2026

Kolkata .(Agency)
Gold and silver prices have recorded a sharp rise on December 29, 2025, Monday. Both precious metals are trading around new highs in the domestic market. According to the latest update on Monday morning, strong buying was seen in gold and silver. The trend of investors seems to be moving towards safe investment once again. This rise in prices at the end of the year is attracting people's attention. Today, the price of 24-carat gold in India has reached Rs 1,40,750 for 10 grams. The price of one gram of gold was recorded at Rs 14,075. 22 karat gold was available for Rs 1,29,021 for 10 grams. The price of one kilogram of gold has reached Rs 14075000. Due to the steadily rising prices, the movement in the market has intensified.Silver price rally continues Gold prices have risen sharply today. The price of one kilogram of silver has reached Rs 2,53,650. The price of one gram of silver has been recorded at Rs 254. Rs 2537 rupees has to be paid for 10 grams of silver. This rise in silver prices is surprising to investors.

Gold and silver on MCX
Gold remains in a strong position on the MCX as well. The price of 10 grams of gold in India MCX stood at Rs 140385. The price of silver on MCX was recorded at Rs 2,53,551 for 1 kilogram. Both metals touched high levels during the trading session. There is a bullish atmosphere in the domestic futures market.

Support from the international market
The price of gold in the US Comex market was around \$4536 per ounce. At the same time, the price of silver was recorded close to \$79 per ounce. The impact of fluctuations in the international market was also shown on the Indian market. Due to global uncertainty, investment in precious metals has increased.As the Gold prices continue to rise, Pranav Mer, Vice President, EBG, Commodity & Currency Research, JM Financial Services Ltd, said that in 2026 the yellow metal is not expected to rise as much as it did in 2025. However, the current moment may push up prices towards USD 5,000-5,200 and Rs 1,50,000-1,55,000 on the MCX in 2026.

Silver prices have recorded a huge jump in 2025. “Silver is supported by strong industrial demand from new-age sectors, relatively cheap pricing compared to gold, and a sharp rally in the industrial metals after Trump’s tariff announcement in April 2025,” Pranav Mer of JM Financial Services, said.

L&T wins order for Hyderabad Greenfield Radial Road phase-2 project

New Delhi.(Agency)
Infrastructure major Larsen & Toubro (L&T) on Monday said it has bagged a "significant" order for the Hyderabad Greenfield Radial Road project. The contract, awarded to L&T's transportation infrastructure business vertical, covers the second phase of the project in Ranga Reddy district.L&T classifies an order amount ranging between Rs 1,000 cr to Rs 2,500 cr as 'significant'.It involves the construction of a "22.3 km 3+3 lane access-controlled radial road" to boost connectivity in the region, L&T said in a filing to BSE.The Hyderabad Greenfield Radial Road phase-2 holds strategic importance as the first radial connector linking Hyderabad's outer ring road to the proposed 340-km regional ring road , enhancing regional connectivity.It will improve access to key growth hubs like IT corridors and electronic city, driving economic development in Telangana's Ranga Reddy district.Under the contract, the infrastructure firm will construct a 3.6 km long viaduct, minor bridges, underpasses and culverts."Construction of service roads on both sides, extensive retention structures, storm water drainage system, footpaths, cycle track and landscaping works is also in L&T's scope," the filing said.Larsen & Toubro is engaged in engineering, procurement and construction projects, hi-tech manufacturing and services operating across multiple geographies.

OpenAI's new job offer brings \$500 mn pay and high stress: Details here

New Delhi.(Agency)
OpenAI founder Sam Altman has announced a new senior job role that will pay more than half a million dollars a year. The role focuses on reducing the risks linked to rapidly advancing artificial intelligence (AI) systems. Altman said the company is hiring a "Head of Preparedness", calling it a critical position at a time when AI models are improving very quickly. He warned that the job will be demanding, saying, "This will be a stressful job, and you'll jump into the deep end pretty much immediately." The compensation for the role is \$555,000, along with equity.Sam Altman highlights AI impact on mental health Altman said OpenAI has already seen early signs of AI affecting mental health in 2025. In a post on X, Altman said, "This is a critical role at an important time; models are improving quickly and are now capable of many great things, but they are also starting to present some real challenges. The potential impact of models on mental health was something we saw a preview of in 2025; we are just now seeing models get so good at computer security that they are beginning to find critical vulnerabilities."Altman explained that while OpenAI has systems to measure how powerful its models are becoming, the company now needs a deeper understanding of how these capabilities could be misused. He said the goal is to limit harmful uses of AI in products and in the real world, without stopping people from benefiting from the technology.He added that this work is difficult because there are few past examples to learn from. Some ideas that seem helpful at first can create unexpected problems later.

PAN—Aadhaar not linked yet What happens if you miss December 31 deadline

If your PAN is still not linked with Aadhaar, the clock is ticking. The Income Tax Department has set December 31, 2025 as the final deadline, and missing it could make your PAN inoperative, affecting tax filing and refunds.

New Delhi.(Agency)
The Income Tax Department has reminded PAN cardholders to complete the PAN—Aadhaar linking process before the December 31, 2025 deadline. Those who fail to do so risk their PAN becoming inoperative, which can disrupt several tax and financial activities.According to the department, PAN cards that are not linked with Aadhaar within the prescribed time will not be valid for key transactions, including income tax filing and refund claims.WHAT IS PAN—AADHAAR LINKING?

PAN—Aadhaar linking is the process of connecting a person’s Permanent Account Number with their Aadhaar number.This helps the tax department verify identities and prevents the issue of multiple PAN cards to the same individual. At present, keeping this link active is compulsory for all taxpayers in India.WHY LINKING PAN WITH AADHAAR IS IMPORTANT Under Indian tax laws, PAN—Aadhaar linking is no longer optional. If the two are not linked, the PAN may be declared inoperative.An inoperative PAN can cause problems while filing income tax returns, delay refunds, and affect various financial transactions such as investments and bank-related activities. In fact, the Central Board of Direct Taxes has issued a special directive for individuals who obtained their PAN using an Aadhaar enrolment ID instead of a final Aadhaar number. These individuals have been given time until December 31, 2025, to complete the linking using their actual Aadhaar number.If the process is not completed within this timeline, the

PAN may become inoperative from January 1, 2026, which could lead to difficulties in tax compliance and other financial matters. HOW PAN—AADHAAR DEADLINES HAVE CHANGED



The PAN—Aadhaar linking deadline was first set for June 30, 2023, and later extended to May 31, 2024, with a late fee of Rs 1,000. The latest notification dated April 3, 2025, offers relief only to those who used an Aadhaar enrolment ID while applying for PAN.Tax experts point out

that no penalty will be charged if this group completes the linking within the extended deadline. However, other PAN holders who missed earlier cut-off dates may still have to pay a Rs 1,000 fee under Section 234H.

WHAT HAPPENS IF YOUR PAN BECOMES INOPERATIVE?
If a PAN becomes inoperative, taxpayers may not be able to file income tax returns or receive refunds.Certain financial transactions may also get blocked, and higher tax may be deducted at source in some cases until the PAN is made active again.HOW TO CHECK PAN—AADHAAR LINK STATUS Taxpayers can easily check whether their PAN is linked with Aadhaar through the Income Tax e-filing portal. By entering PAN and Aadhaar details, the portal shows the current linking status. If the link is missing, a clear message appears on the screen.

Hindustan Copper share price jumps over 11%: What's driving the rally

New Delhi.(Agency)
Shares of Hindustan Copper surged as much as 10% in early trade on Tuesday, emerging as one of the top gainers on Dalal Street amid strong global copper prices and renewed buying interest in metal stocks.The Hindustan Copper stock was trading at Rs 528.55, up 11.13%, at around 11:24 am on the Bombay Stock Exchange (BSE). In the past five trading sessions, shares of the company have gained a whopping 32%.The sharp move reflects optimism around copper's demand outlook, tight global supply conditions and expectations of improved earnings visibility for domestic producers.COPPER PRICES GAINING MOMENTUM One of the key triggers behind the rally is the continued strength in global copper prices.Copper prices have remained elevated on the back of rising demand from electric vehicles, renewable energy projects, power transmission and large-scale infrastructure spending. As a critical input for EVs, solar installations and grid expansion, copper is a direct beneficiary of the global energy transition.

Market participants say sustained firmness in overseas copper prices has improved the earnings outlook for mining and metal companies, including Hindustan Copper.

SUPPLY CONCERNS ADD TO



MOMENTUM
Supply-side challenges have further supported copper prices. Disruptions at major copper mines, declining ore grades and delays in capacity expansion projects globally have tightened supply. With demand continuing to rise, the imbalance between supply and consumption has kept prices firm, adding to bullish sentiment around copper-linked stocks.

COMPANY-SPECIFIC OPTIMISM LIFTS STOCK

Investors are also factoring in expectations of better operational performance at Hindustan Copper. The company has been focusing on capacity expansion, improving ore output and increasing metal production across its mines. Any improvement in volumes, combined with elevated copper prices, has a direct and positive impact on margins and profitability. Traders say the stock has seen renewed interest from both institutional and retail investors, aided by broader optimism around metal stocks and the PSU theme.

TECHNICAL BREAKOUT SEEN
From a technical perspective, the sharp rise suggests a breakout from recent consolidation levels.Analysts tracking the stock say the rally has come on strong volumes, indicating fresh buying rather than short covering alone. If momentum sustains, the stock could see further upside in the near term, though volatility is likely given the sharp run-up.

Indian Railways in 2025: Vande Bharat in Kashmir, Kavach enhanced, over 99% electrification - The milestones

New Delhi.(Agency)
The year 2025 was a historic year for Indian Railways. This year Railways took many big decisions related to technology, environment, passenger comfort, safety and network expansion. These steps helped accelerate the railways towards building a modern, digital, inclusive and future-ready transport system. Vande Bharat and expansion of high-speed trainsIn 2025, the Vande Bharat Express network expanded rapidly. Advanced version schemes like Vande Bharat 4.0 have also appeared, which aims to provide more speed and better comfort. The introduction of semi-high-speed trains and the trial of upgraded trainsets promoted faster and better intercity travel. During the Calendar year-2025, 15 Vande Bharat express trains were introduced. The Vande Bharat Sleeper is expected to be launched in 2026.Big focus on

technology and safety Railways have taken steps to modernise the old train control system this year. The Kavach automatic train protection system was implemented and the task of finishing level crossings without gates was accelerated. Almost complete electrification of the broad gauge network was also a major achievement, which made the operation more clean.

Green Initiative: Hydrogen-powered train

Moving towards green transport, Indian Railways has developed the first hydrogen train made in the country. It was prepared for a trial run, making India one of the countries working on zero-emission trains.

Digital improvements for travelers

In 2025, the passenger reservation system was redesigned and digital platforms like Swarel started. Aadhaar authentication has been made

mandatory in Tatkal ticket booking. IRCTC has disabled more than 3 crore suspicious user IDs to prevent fake bookings. Special facilities have also been increased for the elderly, pregnant women, disabled and visually impaired travelers.Railway network expansion and special trainsThe Railway ministry informed that Indian Railways commissioned over 900 kilometres of new track lines during the period April 1 and 30 November 2025. Ever since the Modi government came to power in 2014, a total 34,428 km of new track has been laid across Indian Railways at an average of 8.57 km/day, which is more than twice the average daily commissioning (4.2 km/day) during the period 2009–14.89 special trains were run in December to handle the crowd of passengers. New superfast trains like Golden City Express were also introduced, which strengthened tourism and economic corridors.

Silver breaches Rs 2.5 lakh per kg for 1st time: Why waiting may be wiser

The sharp rise has put silver firmly in the spotlight, forcing investors to confront a familiar question at uncomfortable levels: is it still worth buying, or is patience the better strategy now

New Delhi.(Agency)
Silver prices have crossed a major psychological milestone in India, breaching Rs 2.5 lakh per kg for the first time, as a powerful global rally continues to push the metal higher.The sharp rise has put silver firmly in the spotlight, forcing investors to confront a familiar question at uncomfortable levels: is it still worth buying, or is patience the better strategy now? **WHAT IS DRIVING SILVER'S RECORD RALLY?** Silver's surge has been driven by a mix of global and domestic factors.Internationally, silver prices have hit fresh record highs, supported by strong industrial demand, tight supply conditions and rising investor interest. Silver's

growing use in solar panels, electronics, electric vehicles, and battery technologies has added a structural layer of demand that did not exist at this scale in earlier cycles.At the same time, global inventories remain constrained after years of underinvestment in mining. With supply struggling to keep pace, prices have moved sharply higher once investment flows returned.In India, the jump in global prices, combined with currency movements, has translated into record domestic rates, pushing silver beyond Rs 2.5 lakh per kg.

WHY SOME EXPERTS ARE URGING CAUTION

Not everyone believes this is the right time to rush in.Market expert Avinash Gorakshakar cautions investors against chasing silver after such a sharp run-up. “When everybody starts buying the same commodity at elevated levels, then something is wrong,” he has said, noting that silver has crossed levels that even technical analysts did not anticipate. While Gorakshakar remains positive on silver's long-term demand outlook, he expects near-term profit booking.

According to him, silver’s structural story over the next two to three years remains strong, but short-term corrections are very much possible.“At these levels, even if you want to buy silver ETFs or take direct exposure, it makes sense to wait,” he said,



adding that a correction of around 10 percent or possibly more cannot be ruled out. Such a pullback, he believes, could offer a better entry point for long-term investors.

TECHNICAL INDICATORS STILL STRONG

On the other hand, technical indicators suggest that silver's broader uptrend is still intact.Ponnudi R, CEO of Enrich

Money, says silver continues to dominate the precious metals space and has significantly outperformed gold in this cycle.According to him, the rally is being driven by a powerful combination of safe-haven demand, accelerating industrial usage and persistent structural supply deficits. “The bullish structure remains intact, with corrections staying brief and contained,” he has said.From a technical standpoint, Ponnudi sees further upside potential in international markets, with silver targeting higher levels as long as key support zones hold.In the domestic futures market, MCX silver prices are hovering near record levels, mirroring the strength seen globally.Ponnudi says the long-term bullish framework on MCX remains valid as long as prices stay above Rs 2.5 lakh. Any deeper corrective move, he believes, is likely to find support in the Rs 2.4 lakh to Rs 2.35 lakh zone.“A decisive breakout above current levels could trigger the next leg of the rally,” he said, adding that the broader trend continues to favour accumulation on dips rather than aggressive buying at peaks.

Dense fog hits operations at Delhi airport; 128 flights cancelled and 8 diverted

The Delhi airport issued a passenger advisory as dense fog disrupted flight operations, with delays and cancellations expected during the day.

New Delhi.(Agency)
OFlight operations at Delhi’s Indira Gandhi International (IGI) Airport were hit by dense fog Monday morning, leading to the cancellation of 128 flights and diversion of eight others, airport sources said.
According to the sources, 64 arriving and 64 departing flights were cancelled at the country’s busiest airport, and eight flights were diverted as visibility dropped sharply across the national capital and parts of Northern India.
“Due to persistent dense fog, flight operations continue to remain under CAT III conditions, which may result in flight delays,” the airport operator Delhi International Airport Limited (DIAL) said in an advisory, adding that teams were working with stakeholders to minimise inconvenience to passengers.
At airports which are certified for Category III conditions, aircraft equipped with special landing systems and trained crews can



operate in very low visibility. However, it during severe fog.
limits the number of flights that can operate The Ministry of Civil Aviation also issued an

advisory stating that flight operations at select airports in Northern India could be affected by fog, leading to possible delays.
Airlines also issued advisories warning of possible disruptions. In a post on X, IndiGo advised passengers to check their flight status before leaving for the airport and to allow extra time for travel, as fog could also affect road traffic.
“Fog continues to persist across Delhi and several airports in northern India. Visibility remains reduced and, as a result, flight movements are presently slower than normal, with some delays being experienced. We will continue to manage operations under the prevailing conditions, sequencing departures and arrivals to maintain orderly operations,” the airline said.
Over the past few weeks, several days of low visibility have led to flight delays, diversions, and cancellations, particularly during the early morning hours.

Landlord arrested for sexually assaulting girl in North Delhi’s Burari: Police
The incident happened when the girl returned from her school to her house on Friday afternoon, and was alone in the house, according to police sources.



New Delhi.(Agency)
A girl was allegedly sexually assaulted by her 52-year-old landlord in North Delhi’s Burari area on Friday, a police officer said. A case has been registered under the Protection of Children from Sexual Offences (POCSO) Act and the accused has been arrested, officers added.
The incident happened when the girl returned from her school to her house on Friday afternoon, and was alone in the house, according to police sources. “The landlord has a shop of religious amenities nearby. The man came inside the house on the pretext of house repairs,” a police officer said.
The accused then threatened to kill the girl and then sexually assaulted her, the police said. Later that evening, when the girl’s mother came back, she got to know about the incident. “The girl told her mother about the incident and she then filed a complaint. The medical test of the girl was done and a case was registered,” the officer added.

Prepare SOPs on response to tackle crisis: Delhi top cop to units in wake of Bondi Beach terror attack

Moving from chaos to coordination in the shortest possible time in focus in fresh SOPs

New Delhi.(Agency)
In the wake of the recent mass killing incident at Bondi Beach in Australia, the Delhi Police have moved to sharpen their preparedness for a similar crisis, directing senior officers to frame a comprehensive protocol on response, firing, and training for such situations, has learnt. Delhi Police Commissioner Satish Golchha, sources said, has directed the Special CPs of two units — Operations and Training — to jointly draft a detailed standard operating procedure (SOP) that clearly spells out the roles and responsibilities of every unit involved in counter-terror and active-shooter style responses.
Moving from chaos to control in the shortest possible time in such situations and ensure maximum coordination and minimum confusion —this is set to be the goal for different units as the SOPs are framed.
According to a senior police officer, the new protocol will detail unitwise responsibilities for district police, PCR units, SWAT teams, specialised units of the Special Cell and crime branch, traffic units, and the Special Branch unit. “Under this SOP, they will define the exact work distribution; who takes initial command at the scene and how command is transferred when specialised units arrive; how perimeter security and crowd control are to be enforced in real time, communication channels between field units, control rooms, and senior leadership to avoid overlaps,” the officer said.
Apart from this, the Special CP (Training) is planning to map all the operational requirements into regular and scenario-based training modules.
“He is expected to include simulated active shooter periodic refresher courses for the beat police staff, station staff and first responders on rapid assessment and decision-making in the crisis situation,” the senior officer said.

Real-time data, source identification: Delhi govt set to develop AI-enabled data system with IIT Kanpur to combat air pollution
This evidence will enable agencies to act at the source of pollution, rather than resorting to blanket bans and reactive measures,” the official statement read.

New Delhi.(Agency)
Hyperlocal source apportionment, sensor-based monitoring and real time data are expected to be among the highlights of an artificial intelligence (AI)- enabled decision support system (DSS) that is likely to be developed for the Capital as the Delhi government explores a collaboration with Indian Institute of Technology Kanpur to tackle the air pollution in the city.
“Under the leadership of CM Rekha Gupta, we are ensuring that Delhi’s fight against pollution must be scientific, sustained and strategic. We are moving towards a model where decisions are driven by real-time data, source identification and measurable outcomes, not reactive measures,” Environment Minister Manjinder Singh Sirsa was quoted as saying in an official statement on Sunday. The focus, he said, is to move away from blanket restrictions towards targeted action at pollution hotspots. The

proposed collaboration, according to an official statement, aims to strengthen the ability of the Capital to identify pollution sources at a granular level, assess their impact, and enable



targeted, timely interventions across sectors. “A key pillar of this approach is dynamic source apportionment, which will help authorities scientifically identify contributions from dust, transport, industry, biomass burning and regional factors.
This evidence will enable agencies to act at the source of pollution, rather than resorting to blanket bans and reactive

measures,” the official statement read.
“Our objective is clear — pollution control cannot be seasonal. Delhi needs a 365-day action framework that combines technology, governance and enforcement, working in complete coordination backed by data driven decision-making,” the Minister added.
At present, the Capital relies on Indian Institute of Tropical Meteorology Pune’s (IITM) DSS. Experts have flagged concerns in the past about the reliability of data. The Indian Express had reported on October 1 that Delhi’s Air Quality Early Warning System (AQEWS) has been able to forecast high-pollution days with more than 80% accuracy, but its reliance on outdated emission inventories and the tendency to underpredict pollutant levels limit its effectiveness, according to a study by the public policy think tank Council on Energy, Environment, and Water (CEEW).

Verdict of a disappearing shield: How the Aravallis edge towards erasure

New Delhi.(Agency)
As one of the world’s oldest geological formations, the Aravalli Hills range fights for its existence after the Supreme Court redefined its peaks. According to the new definition on the recommendations of the federal government, only peaks or parts of the hills that are 100 metres above the ground level are to be treated as Aravalli hills.
Protests have erupted across northern India, especially the NCR, Haryana and Rajasthan, with citizens worried about the degrading air quality, the effects of which are widely felt, particularly during the winter months. However, earlier this year, sudden dust storms led to an overnight dip in the city’s air quality index (AQI).
While walking across the city during that time, one could feel dust clinging to the skin. Now, dust storms are not a new

phenomenon. Delhi has been witnessing them for years, but the frequency of these storms, along with hyper-temperatures and warmer nights, has only been observed largely in the last few years.



Posh areas like South Delhi’s Chhatrapur too remained no exception to it. However, just a few kilometres away, beyond the luxurious farmhouses and wedding resorts, lie the humongous Aravalli ranges – scarred and blasted after years of mining.

Into the wild
As one crosses that area and drives through the Delhi-Faridabad highway, a pit stop while entering the Mangarban village shows the mined area on the hills.
“However, after a ban by the Supreme Court in 2009, mining was stopped in these locations,” said Sunil Hasrana, a local environmental activist who has long been associated with the fight to preserve the Aravallis.
Hasrana pointed out some of the green patches on the hills that surrounded their locality.
“After mining was stopped in these areas, the greenery was restored in the following years. If the recent orders from the SC get implemented in the upcoming years, then these hills might go back to ground zero and have a detrimental effect on the villagers and the residents of Delhi NCR,” he added.

Edited videos, blackmail: How a crime syndicate ran a system of fear to target traffic cops across Delhi

For over a decade, a crime syndicate ran a parallel system of fear, recording and coercing traffic police across the Capital. This is their story.

New Delhi.(Agency)
“Picture this,” a senior-rank Delhi Police officer says. “Traffic policemen, heads bowed, sitting on the floor. Raju leans back in a chair, completely calm and unshaken.” He pauses and lets the image sink in. Then he adds, “That’s how scared they were of him.”
The image has circulated quietly within the Delhi Police for months. The description comes from one of the officers investigating the case. Rajkumar Meena, also known as Raju (45), is now at the centre of a sprawling crime syndicate. According to the police, over more than a decade, the syndicate allegedly blackmailed traffic officers using doctored videos to extort money.
Not just this officer, but many others within the Delhi Police murmur that the case is unlike anything previously seen in the national capital. “It has sent shockwaves through the police establishment,” said another officer, in disbelief.
The reason, another officer explains, was

what they describe as the “breaking point”. “It came”, the officer says, still shaken, “when the syndicate targeted women traffic officers”. According to the police sources, Raju threatened to circulate purported videos showing women traffic officers



accepting bribes unless they complied with his inappropriate demands.
“As the complaints from women traffic officers began to reach senior ranks, the response hardened,” a police officer said. Then, on the instructions of Delhi Police Commissioner Satish Golcha, nearly 15

FIRs were clubbed together, and the case was brought under the stringent provision of the Maharashtra Control of Organised Crime Act (MCOCA).
“A step that signalled just how seriously the police now viewed the threat,” a senior-rank police officer said. That fear and unease surrounding Raju can also be sensed far from the police offices – on the main road in North West Delhi’s North Ghonda area. The single-lane road is lined with closely packed houses and small shops selling sweets, jewellery, and groceries. At one of the grocery stores, when asked about Raju’s house, a man in his twenties shakes his head, denying any knowledge of the name. He then pulls a phone from his pocket, presses it to his ear – as if pretending to take a call – and gestures with his right thumb towards a blue building.
The blue structure is a primary public school. Wedged between it and a small jewellery shop is a three-floor building bearing a prominent board: ‘Surekha Rani, Advocate’. From the second floor, an

elderly couple peeps out and shouts, “Wo aayi nahi hai abhi...”
Surekha Rani, a Delhi-based lawyer practicing at Karkardooma district court, is Raju’s wife. Raju, she says, was questioned for days before his arrest. “On the fourth day, he went to the police station at 5 pm. By 6:30 pm, a 14-15 page FIR was registered. They had already made up their mind,” she alleges, struggling to catch her breath.
Surekha says she married Raju nearly two decades ago and moved almost immediately to their current residence. What she knew of her husband, she claims, was that he was involved in some form of transport business. Investigators describe a far more elaborate operation.
Police officers say Raju had cast a long shadow over some traffic police officers for more than a decade. A single word – taateesh (investigation), typically used by police officers to make criminals squirm – had come to mean something very different in this case. Whispered in police stations, it signalled that a sting operation had been conducted.



New Delhi.(Agency)
In August 2024, a woman was looking for a house at some posh society in Gurgaon. DLF Camellias was on her list, but it was beyond her budget.
Soon, she met Abhinav Pathak, a medicine distributor, who claimed to know people who could help her get a house in DLF Camellias for Rs 12.04 crore — nearly half the original price. How? “He claimed to have already purchased a premium property through a bank auction and offered to transfer it to her at a lower rate,” a police officer said. A bank usually puts a property on auction to recover a ‘bad loan’. It is when the owner of a property fails to pay dues to the bank. The properties, thus auctioned, are sold at lower rates.
The woman took the bait.
“In August 2024, the complainant was approached by M/s MG Leasing & Finance. Representatives showed her meticulously forged documents — sale certificates, covering letters, and auction receipts — all purportedly from the State Bank of India,” DCP (Crime Branch) Aditya Gautam said.
Convinced, the woman transferred Rs 12.04 crore through RTGS and demand drafts between August and October last year. It was only later, when the bank confirmed every document was forged, that the victim realised that no such flat was available. A complaint was filed on June 13 this year.
Delhi Police Crime Branch’s Inter State Cell took up the case and traced the money trail. Bank statements confirmed the massive sum had been credited to an account of some proprietorship firm, owned by one Mohit Gogia. An extensive manhunt was launched across Delhi-NCR, Bhopal, and Mumbai. But the accused had, by then, gone underground.
The breakthrough in the case was made through technical surveillance and manual intelligence. On November 22 this year, a specialised team led by inspectors Satender Poonia and Sohan Lal tracked Gogia while he was fleeing from Mumbai towards Uttarakhand. He was apprehended near Doiwala on the Rishikesh-Dehradun Road.

China stands ready to continue to provide (the) platform and create conditions for Cambodia and Thailand to have fuller and more detailed communication,” a Chinese Foreign Ministry statement read. The ceasefire agreement comes with a 72-hour observation period, at the end of which Thailand agreed to repatriate 18 Cambodian soldiers it has held as prisoners since earlier fighting in July. Their release has been a major demand of the Cambodian side. Prak Sokhonn, in a statement after his meeting with Wang, expressed deep appreciation for China’s “vital role” in supporting the ceasefire. China also announced 20 million yuan (\$2.8 million) of emergency humanitarian aid for Cambodia to assist the displaced.

Trump-Putin call was initiated by the U.S. side and was "friendly, benevolent and businesslike." Ushakov said Trump and Putin agreed to speak again "promptly" after Trump's meeting with Zelenskyy. But Ushakov added that a "bold, responsible, political decision is needed from Kyiv" on the fiercely contested Donbas region in eastern Ukraine and other matters in

He held out the possibility that negotiations could still fall apart. "In a few weeks, we will know one way or the other, I think," Trump said. "We could have something where one item that you're not thinking about is a big item, breaks it up. Look, it's been a very difficult negotiation. Very detailed."

NEWS BOX

ISL future in flux as Odisha FC weigh exit, Jamshedpur commit to revised season

NEW DELHI. (Agency)
The Indian Super League finds itself at a crossroads ahead of the 2025–26 season, with financial uncertainty and format concerns threatening to delay clarity on how, or even whether, the league will begin on time. A crucial online meeting between ISL clubs and the All India Football Federation on Sunday laid bare the divide, with Jamshedpur FC committing to the season and Odisha FC openly weighing a possible exit. Jamshedpur emerged as the only club to formally confirm participation regardless of the league’s final structure. Odisha, however, conveyed to the federation that it would reconsider playing this season if additional costs are imposed without a commercial partner backing the league. These contrasting positions were presented during discussions involving all top-tier clubs and a four-member AIFF panel that included deputy secretary general M Satyanarayan.

One major takeaway from the meeting was agreement on abandoning the traditional home-and-away format. With several stadiums unused for close to nine months and



limited time to prepare them, the league is now likely to be staged at two or three centralised venues. While the AIFF had earlier indicated a February 5 start, final dates remain undecided. Key points discussed during the meeting included: Season format: A centralised model, either conference-based or a single-leg league where teams play each other once. Match count concerns: The proposed format would see teams play only 15 matches, falling well short of the AFC’s mandatory 24-match requirement for continental qualification. AFC exemption request: Clubs have asked AIFF to seek a one-time waiver from the Asian Football Confederation due to exceptional circumstances. Cost-sharing model: Total operational expenses are estimated at Rs 35-40 crore, with each club potentially contributing around Rs 2.5 crore. Financial pressure remains a central concern. Club representatives warned that if even one or two teams opt out, the remaining clubs could be forced to shoulder a higher share of costs.

Ashes: Gus Atkinson ruled out of Sydney Test, England to not name any replacement

NEW DELHI. (Agency)
England fast bowler Gus Atkinson has been ruled out of the fifth and final Test of the ongoing Ashes 2025–26 after pulling his hamstring during the fourth match in Melbourne. Atkinson helped England claim the first wicket on Day 2 when he had nightwatchman Scott Boland (6 off 17) edging one to wicketkeeper Jamie Smith. However, he left the field grimacing in pain after completing his fifth over, having pulled his hamstring. Atkinson subsequently underwent scans, which confirmed that he has sustained a left



hamstring injury. As a result, he will not be featuring in the final Test, which is scheduled to be played in Sydney. “England Men’s seamer Gus Atkinson has been ruled out for the remainder of the Ashes tour after scans confirmed he has sustained a left hamstring injury. The Surrey right-arm-er left the field after bowling his fifth over of Australia’s second innings during England’s victory at the MCG in the fourth Test. England will not call up a replacement for the fifth Test, which gets under way in Sydney on 4 January,” informed the England and Wales Cricket Board in a press release. Atkinson played three Tests in the series, scalping six wickets with best figures of 2/28 in Melbourne. He also scored 73 runs with the bat from five innings, with a best score of 37 during the first Test in Perth. The speedster becomes the third English bowler to be ruled out of the ongoing series. Atkinson was brought into the playing XI for the fourth Test in place of fast bowler Jofra Archer, who was also ruled out of the remainder of the Ashes series with a side strain ahead of the Melbourne Test.

John Cena's farewell chaos, a Rocky dilemma: Why 2025 wasn't WWE's finest year

A year that was supposed to be a brilliant one for WWE ended being one of the frustrating ones from a creative standpoint. The company fumbled John Cena's farewell run and the absence of the Rock and the return of Brock Lesnar failed to inspire a revival for them in 2025.

Liverpool. (Agency)
When Cody Rhodes defeated Roman Reigns in the main event of WrestleMania 40, it seemed like one of the best moments in WWE history. The finish of the match was laced with the presence of some of the biggest superstars in the company’s history, with The Rock playing his role as the Final Boss to perfection, John Cena coming to the aid of Rhodes, and The Undertaker adding to the awe factor of the entire spectacle. Rhodes finished his story, Reigns’ stint at the top

came to an end, and overall, everyone was in love with pro wrestling once again. This was exactly what fans had expected when Triple H, aka Paul Levesque, took charge of creative. As a result, anticipation was sky-high heading into 2025, with so many stories waiting to be explored.

There were several superstars ready to be thrust into the spotlight and become the next big stars. Questions loomed large — what was next for Rhodes and the Final Boss? Adding to the intrigue, John Cena revealed that 2025 would be his final year as an active wrestler as he prepared to pivot away from the business. All of this meant expectations were incredibly high for WWE in 2025. However, what fans eventually witnessed left many disappointed and, at times, furious. Inconsistent booking and a lack of compelling storylines led many to label the year as one of WWE’s weakest from a creative standpoint. While there were a few bright spots, with superstars like Bron Breakker emerging as a potential future cornerstone, many others were relegated to side roles without any clear direction. The Rock’s involvement, which was supposed to elevate the product, only added to the confusion.



So where exactly did WWE go wrong in 2025? Let’s take a closer look.

LAST TIME IS NOW FAILS TO CONNECT
The moment Cena announced his retirement, all eyes were on how WWE would handle the final run of a modern-day great. Over the years, legends such as Ric Flair, Shawn Michaels, and The Undertaker had all been allowed to bow out on their own terms, with their final runs being fondly remembered by the WWE Universe.

At the Royal Rumble, Cena made his intentions clear — he wanted to break Flair’s record for the most World Championship reigns in WWE history. The Cenation Leader quickly became a favourite to win the

Rumble and headline WrestleMania. When the final two came down to Cena and Jey Uso, the crowd was firmly behind the veteran. However, WWE opted to give “Main Event” Jey Uso the victory, a decision that ultimately didn’t do much for either man. Cena then entered the Elimination Chamber, needing a major win to secure his spot at WrestleMania. At the same time, The Rock expressed his desire to have Rhodes as “his guy,” further complicating the WWE Championship picture. Cena survived the Chamber match and punched his ticket to WrestleMania. Then came one of the most shocking heel turns in WWE history. Cena turned his back on everything he stood for, aligned with The Rock, and set his sights on Rhodes. Many expected this to mirror Hulk Hogan’s nWo transformation — a full-blown Hollywood villain version of Cena. The buzz was incredible. However, Cena’s heel run quickly fizzled out. While there were a few standout moments and matches, the overall execution lacked depth. Cena himself later admitted that the run was rushed, with The Rock’s absence and creative missteps playing a major role in its failure.

Joe Root backs Brendon McCullum, Ben Stokes to continue despite Ashes loss

NEW DELHI. (Agency)
Star England batter Joe Root has backed the Ben Stokes and Brendon McCullum-led team management despite England losing the ongoing Ashes series in Australia. England are trailing the five-match rubber 1–3 with one match remaining. The Ben Stokes-led side travelled to Australia with a fresh and renewed batting approach, aiming to end their long-standing series victory drought in the country.

While England did manage to register a Test win in Australia after almost 15 years, they failed to win the series, thereby continuing their 15-year-long agony Down Under. Despite what has been a largely forgettable series, Root has thrown his support behind McCullum and Stokes to continue in their respective roles, stating that the team has improved significantly under their leadership. In terms of the playing group, we’re absolutely committed to the management. They’ve been outstanding. You look at the group of players that we’ve got and you look at the guys that were involved in the team when I was captain four years ago, and you look at their records individually, and every single one of them has improved as a player. This team has improved as a team. So I think it would be silly for the amount of hard



work and things that have been done,” Root was quoted as saying by the BBC. Root admitted that there were areas for improvement for the England side but credited the team for making giant strides collectively as a group. “Yes, we can be better and there are certain areas that we’ll continue to keep working at, but that management works extremely hard. They might do things in a slightly different way and it might appear different to what we’re used to as an English team, but I think we’ve made great strides as a group and a big reason for it is because of the guys that we have behind us,” Root said. The former England captain also expressed disappointment at having lost his fourth Ashes series in Australia, but praised the team for winning a Test in the country for the first time since 2011.

IND vs NZ: Special tickets for students, specially-abled fans in Indore ODI

NEW DELHI. (Agency)
The tickets for the final ODI of a three-match series between India and New Zealand, scheduled for January 18 at the iconic Holkar Stadium in Indore, will be sold exclusively online, the Madhya Pradesh Cricket Board has said. The series finale is set to be a special occasion for cricket fans with the MPCA rolling out dedicated ticketing initiatives for students and specially-abled spectators. As the concluding match of India’s first men’s international cricket series of 2026, the Indore ODI carries added significance. The series opens with matches in Vadodara and Rajkot, before culminating under lights at Holkar Stadium in what will be a day-night encounter. MPCA has earmarked specific sections and quotas to ensure wider access to the marquee contest, especially for young fans and spectators with disabilities. Continuing its long-standing practice, the association will offer student concession tickets in the East Stand (Lower and Second Floor), subject to limited

availability. Each student will be entitled to purchase one ticket only, priced at Rs 750 for the East Stand (Lower) and Rs 950 for the East Stand (Second Floor), inclusive of applicable taxes. The process for availing these tickets has been designed in two



stages. Students must first register online and upload valid documents—such as a current institutional identity card or recent academic records—through the official ticketing portal. Applications will be verified by MPCA, and successful applicants will receive a confirmation link

via WhatsApp or email to complete the purchase. The registration window opens at 11 am on December 31, 2025, and will remain live until the quota is exhausted or 5 pm on January 1, 2026, whichever is earlier. A similar mechanism has been put in place for specially-abled spectators, underlining MPCA’s emphasis on inclusivity. Tickets for this category are priced at Rs 300 and allocated in the North-East Gallery. Applicants must upload a valid government-issued disability certificate as part of the verification process. Each eligible spectator can purchase only one ticket, and those requiring wheelchairs are expected to arrange them independently on match day.

All tickets—regular, student concession, and specially-abled—will be sold exclusively online through ‘District by Zomato’, MPCA’s official ticketing partner. General ticket prices for the match range from Rs 800 to Rs 7,000 across various stands and pavilion levels, with additional payment gateway and courier charges applicable.

Sunil Gavaskar questions ICC's double standards: MCG pitch will be rated 'good'

MANCHESTER. (Agency)
Legendary India cricketer Sunil Gavaskar has taken a dig at the ICC (International Cricket Council) over what he described as double standards in the process of awarding pitch ratings. Gavaskar said that the pitch used for the recently concluded fourth Ashes Test at the Melbourne Cricket Ground (MCG) is likely to be rated ‘good’, despite the Test match ending inside two days. The opening day of the MCG Test witnessed 20 wickets fall — the most in Australia on Day 1 of a Test match since 22 wickets tumbled at the Adelaide Oval in 1951. A further 16 wickets fell on Day 2, as the entire Test match was completed within 142 overs.

Following the end of the game, Gavaskar recalled how the pitch for the first Ashes Test in Perth was rated ‘very good’ despite that match also ending inside two days. Taking a swipe at the ICC, he said that since there was a new match referee, Jeff Crowe, instead of Ranjan Madugalle for the Melbourne Test, the pitch might be rated ‘good’ rather than ‘very good’. “Since there

is a new match referee, Jeff Crowe, for the Melbourne and Sydney Test matches, the rating could be different. Since 36 wickets



fell in the Melbourne Test instead of 32 in Perth, Crowe might drop the word ‘very’ from the ‘very good’ that Madugalle gave for the Perth pitch and rate the MCG pitch as good. Surprises never cease, of course, so we may get another rating,” Gavaskar wrote in his column for Sportstar. He also offered a sarcastic take on Indian pitch curators, referring to how ICC match

referees often portray them through poor pitch ratings, calling them horrible groundsmen. “The curators, or as we found out about the person in charge at the MCG, the Director of Turf, may make a human error and get it slightly wrong, but they are not as devious as those ‘horrible groundsmen’ in India who do not even prepare a pitch and expect the batters to score runs on them. Tut tut,” Gavaskar added. The Melbourne Test became the third-shortest Test ever played in Australia in terms of balls bowled, with just 852 deliveries. Only the first Test of the ongoing series in Perth, which concluded after 847 balls, and the 1932 fixture between Australia and South Africa at the same venue, which lasted 656 balls, were shorter on Australian soil. After the match, both captains, Steve Smith and Ben Stokes, criticised the pitch for being too favourable to bowlers. Former players and commentators also expressed concern over the excessive assistance offered to seamers.

T20 World Cup 2026: Australia set to make key Pat Cummins call despite injury

Australia remain confident Pat Cummins, Josh Hazlewood and Tim David will be fit for the T20 World Cup. Despite injury concerns, selectors are set to include the trio in their provisional squad.

MANCHESTER. (Agency)
Australia are expected to stick with Pat Cummins, Josh Hazlewood and Tim David in their T20 World Cup plans despite injury concerns surrounding the trio. With the provisional squad deadline approaching, selectors remain confident that all three players can be fit in time for the tournament



in Sri Lanka and India. Cummins is set to be named in Australia’s initial 15-man squad, although a final decision on his availability will be taken closer to the World Cup. The fast bowler has played only one international match since suffering a lumbar stress injury in July, returning briefly for the Adelaide

Test before being rested again as part of a cautious recovery plan. He is scheduled to undergo further scans on his back in four weeks to assess his readiness. Tim David’s place in the plans has also been retained despite a recent setback. The big-hitting batter picked up a grade two right hamstring

strain during a Big Bash League match on Boxing Day, ruling him out for the remainder of the BBL with Hobart Hurricanes. However, his rehabilitation timeline suggests he should be available for selection when the World Cup begins in early February. Hazlewood has made steady progress in his own recovery, having resumed running after dealing with a hamstring injury and Achilles soreness. Team management remain optimistic about his availability, with his rehabilitation tracking well ahead of the tournament.

Australia’s group-stage schedule could further ease the pressure on returning players. Their opening World Cup match is on February 11, with Ireland and Zimbabwe first up, before a meeting with Sri Lanka on February 16. That buffer could allow extra recovery time, particularly for David. The provisional squad, due to be submitted before the ICC deadline on January 2, may still change depending on Big Bash League form or any fresh injury concerns.



Avneet Kaur

Serves Sexy Winter Fashion In Switzerland With Burgundy Knit Look

Winter fashion, but make it cute, cosy and quietly luxe, that's the vibe Avneet Kaur is serving in Switzerland. Set against postcard-perfect views, her look blends warmth, style and effortless holiday glamour. In her latest Instagram post, Avneet is dressed in a rich burgundy knit sweater that instantly becomes the hero of the outfit. The sweater features textured ruffle detailing down the front and on the cuffs, adding a soft, romantic touch to an otherwise snug winter staple. The deep wine shade pops beautifully against the snowy-blue skies and green landscapes, making it ideal for a European winter escape.

She pairs the sweater with fitted light-blue denim jeans that balance the bulk of the knit and keep the silhouette clean and flattering. The jeans are tucked neatly into knee-high brown leather boots, a classic winter choice that's both practical and polished. The boots ground the look and add a subtle equestrian feel, perfect for strolling through scenic European towns.

Her accessories are minimal but smart. Slung across her body is a compact brown leather shoulder bag with a gold chain strap, adding a hint of luxury without overpowering the outfit. She finishes the look with slim, tinted sunglasses in warm tones, which add a retro edge and protect her eyes from the bright alpine sun. Avneet's hair is pulled back into a sleek ponytail, keeping the look fuss-free and letting the outfit shine. Her makeup is understated yet sharp with defined brows, soft blush and a muted lip that complements the burgundy knit. The setting elevates everything. She's surrounded by Switzerland's winter beauty, towering Christmas trees decorated with red ornaments, snow-capped mountains in the distance, bare-branched trees lining open walkways, and sunlight breaking through dramatic clouds. It's the kind of look that says winter vacation without trying too hard.



Avneet Kaur began her journey in showbiz as a tiny powerhouse on Dance India Dance Li'l Masters in 2010, later joining Dance Ke Superstars. By 2012, she had smoothly transitioned into acting with Meri Maa, followed by Tedhe Hain Par Tere Mere Hain and a memorable stint on Jhalak Dikhhla Jaa, where she became the youngest contestant ever.

Her acting graph only climbed higher with roles in Savitri – Ek Prem Kahani, Ek Mutthi Aasmaan, and Hamari Sister Didi, before making her film debut in Pradeep Sarkar's Mardaani (2014). Over the years, Avneet impressed in Chandra Nandini and as the fierce Yasmine in Aladdin – Naam Toh Suna Hoga. On the big screen, she's been seen in Chidiakhana, Tiku Weds Sheru, Luv Ki Arrange Marriage, and the murder mystery Party Till I Die. Most recently, she starred in Love in Vietnam, India and Vietnam's first co-production, alongside Shantanu Maheshwari and Kha Ngan.

Bigg Boss 19 Winner Gaurav Khanna Shares Emotional Tribute For Salman Khan On His 60th Birthday



Bigg Boss 19 winner Gaurav Khanna marked Bigg Boss 19 host Salman Khan's birthday with an emotional and deeply personal tribute. Fresh off his Bigg Boss win, Gaurav took a moment to thank the superstar host who not only guided his journey inside the Bigg Boss house but also became a major source of inspiration for him. Sharing the same on social media, Gaurav wrote, "Over the years, I've always admired Salman Khan Sir not just the superstar that the world sees, but the person who inspires so many journeys, including mine. That admiration is honestly one of the biggest reasons I chose to step into Bigg Boss 19. To share that space, to be guided by him, and then to hear him say that he would love to work with someone like me felt nothing short of a dream coming true. Moments like these remind you that manifestations do come alive when you believe and stay true to your path. ♦ On this special day, taking a moment to wish the one and only Bhaijaan, Salman Khan, a very happy birthday. Grateful always ♦"

Throughout Bigg Boss 19, Salman Khan openly praised Gaurav's gameplay, calling him one of the most sincere and emotionally intelligent contestants the show has seen in recent years. From praising his calm approach to appreciating the dignity with which he handled conflicts, Salman repeatedly acknowledged Gaurav as a rare player who stayed real and rooted.

In fact, the megastar also said that he will work with Gaurav soon. Meanwhile, Salman Khan marked his 60th birthday with a grand midnight celebration at his Panvel farmhouse on December 27, hosting close friends, family members and colleagues from the film industry. The event was marked by an elaborate spread, thoughtful arrangements for guests and multiple celebrations through the night and early morning.

'Was Given No Freedom': Malti Chahar Recalls How Parents Would Hit Her After Fights



Malti Chahar opens up about her traumatic childhood, revealing how she was given no freedom and how her parents would hit her after fights at home.

Actor Malti Chahar, who recently made headlines for her stint in the Bigg Boss 19 house, has spoken about her traumatic childhood and revealed how life took a difficult turn after seventh grade, and how there was a lot of tension between her parents that she and her siblings had to witness. Malti Chahar shared, in conversation with Siddarth Kannan, "A lot of things went wrong after my seventh grade." And while joking that she got her periods, she added, "I have adenomyosis, a condition that causes extreme menstrual pain. I used to be hospitalised almost every month. There is no permanent cure for it. You can take hormonal medication, but it comes with side effects, so I try to avoid it. Even today, I live with constant pain. Nobody understood me or my pain, even in the Bigg Boss house. The problem is that it is extremely difficult to explain to people with the attitude: 'Sabko hota hai, iska kya hai itna?'" "There was a lot of tension between my parents. They fought constantly, and being the elder sibling, I had to witness all of it. My brother had started playing cricket, which kept him away from these fights," Malti further added. While talking about how she was forced to keep her hair short till 11th grade, she said, "I had told my father that I wanted to participate in the Miss India beauty pageant and pursue a career in the entertainment industry. However, he wanted me to become an IPS officer. He believed that by keeping me away from these ambitions, I would focus on my studies. I was forced to keep short hair until the 11th grade and was given no freedom. It affected me deeply." Speaking about the impact of domestic violence and fights between her mom and dad, Malti said, "We lived in a 1BHK house; where do you go when your parents are fighting? Many times, my mother would hit me after arguing with my father, and at times, my father did the same. They never realised the impact it had on me. They had compatibility issues and have been living separately for the past 13 years."



Sobhita Dhulipala

Calls Ranveer Singh's Dhurandhar 'Mind Blowing', Lauds Sara Arjun: 'What Talent'

Ranveer Singh starrer Dhurandhar, directed by Aditya Dhar, has ruled the box office ever since it released in theatres on December 5. The film has been receiving great reviews, and a number of celebrities including Akshay Kumar, Shilpa Shetty, Anupam Kher, Ram Gopal Varma, and many others praised the film. Now, Sobhita Dhulipala has also shared her review of Dhurandhar, and gushed over the Ranveer Singh starrer. She called it a 'mind-blowing' film unlike any other, and also praised Sara Arjun for her brilliant performance.

Sobhita Dhulipala Reviews Dhurandhar

On Saturday, Sobhita Dhulipala took to her Instagram stories to share her review of Dhurandhar. Impressed with the film, she praised Ranveer Singh, Sara Arjun and director Aditya Dhar. "DHURANDHAR Wow. Wow. Wow. Breathtaking. Mind blowing. Inspiring. Unlike any other. !!! Supreme!!! @adityadharfilms @ranveersingh (folded hand and salute emojis) @saraarjun! What talent, what beauty," she wrote. Check out her Instagram story below! Meanwhile, Dhurandhar has rewritten the Bollywood box office record books. The Ranveer Singh-led spy thriller has emerged

as the highest-grossing Hindi film ever in India, overtaking long-standing benchmarks set by recent blockbusters. On its 22nd day in cinemas, the Aditya Dhar directorial added a little over ₹15 crore to its tally, taking its net domestic collection to ₹648 crore. With this, Dhurandhar has surpassed the lifetime earnings of Shah Rukh Khan's Jawan, which had collected ₹640 crore in India, and claimed the top spot among Bollywood releases.

About Dhurandhar



Dhurandhar follows Intelligence Bureau Chief Ajay Sanyal, played by R. Madhavan, who leads a high-stakes mission to dismantle a terror network in Pakistan. Ranveer Singh portrays a Punjabi youth recruited from prison and trained to infiltrate Karachi's criminal underworld. Dhurandhar stars Ranveer Singh in the lead, supported by Sara Arjun, Sanjay Dutt, Arjun Rampal, Akshaye Khanna and R. Madhavan. Its sequel, Dhurandhar 2, will hit cinemas on March 19, 2026.